प्रयाग कुम्भमाहात्म्य

ला० श्यामलाल हीरालाल, श्यामकाशी प्रेस, मथुरा।

* श्री *

॥ श्रीप्रयाग माहात्म्य ॥

❀ मंगलाचरण ❀

बन्दि गणेश महेश अरु, शारद भव श्रुति सेतु ।
श्रीप्रयाग माहात्म्य को, वर्णत सब हित हेतु ॥

सूतजी बोले—कि अब प्रयाग राज का माहात्म्य वर्णन करता हूं । जिस समय युधिष्ठिर आदि पांचों भाई धर्मक्षेत्र से विजय लक्ष्मी पाकर अपने राज में आये, धर्म धुरन्धर महाराज युधिष्ठिर दुर्योधनादि भाइयों के वियोग से दुखी हो सोचने लगे । देखो हाय ! ग्यारह अक्षौहिणी का स्वामी सुयोधन सेनाओं सहित नाश को प्राप्त हुआ, काशी में रहनेवाले मार्कण्डेय ऋषि ने योग बलसे राजा युधिष्ठिर का हाल जान लिया सो बहुत ही जल्दी मार्कण्डेय जी हस्तिनापुर में पहुंचकर राजद्वार में आ विराजे । मार्कण्डेय जी के पूछने पर राजा बोले हे मुनि श्रेष्ठ ! राज्य के लिये जो कुछ हमारा हाल हुआ है सो आपको भली भांति मालूम है इसी से मैं दुखी हूँ । मार्कण्डेयजी बोले हे राजन् ! सुनो, क्षात्रधर्म को ग्रहण कर युद्ध करने से रण में कभी पाप नहीं लगता तथापि भ्रातृवियोग स्नान करो । यह सुन धर्मराज हाथ जोड़

खड़े होगये और स्नान के लिये तीर्थ व नियम पूछनेलगे कि हे मुनिवर ! आप त्रैलोक्यदर्शी हैं जिससे यह पाप छूटें वही नियम कहिये। मार्कण्डेयजी बोले हे राजन् ! सुनो, सब मनुष्यों के पातक नाश करने वाला तीर्थराज प्रयाग है वहां स्नान दान करने से मनुष्य सर्व पातकों से छूट जाता है।

द्वितीय अध्याय।

युधिष्ठिर बोले हे मुनीश्वर ! ऋषियोंने जिसकी स्तुति की, देवों के देव ब्रह्मा ने जिसको प्रथम कहा उस प्राचीन प्रयाग में जाकर हम किस तरह स्नान करें। मार्कण्डेय जी बोले हे राजन् ! पूर्व की ओर झूसी ग्राम के समीप त्रिवेणी संगम है और उत्तर में वासुकि स्थान है वहीं पर सोमेश्वर सहित योगेश्वरजी महादेव हैं दक्षिण दिशा में कंवल और अश्वतर तथा वहुमूलक नाग हैं। तीनों लोकों में विख्यात प्रजापति का क्षेत्र है, इसमें जो स्नान दान करते हैं वे स्वर्ग में जाते हैं और जो मरते हैं उनका फिर जन्म नहीं होता। हे राजन् ! तीर्थराज प्रयाग की महिमा संक्षेप से कहता हूं। साठ हज़ार महादेवजी के गण तो गंगाजी की रक्षा करते हैं और सत्य वाहन सूर्य नारायण यमुनाजी की सदा रक्षा करते हैं और प्रयाग की तो स्वयं प्रजापति ही सदैव रक्षा करता है देवों सहित विष्णु भगवान् मण्डल की रक्षा करते हैं हे राजन् !

वहां पांच कुण्डहैं जिनमें होकर गंगाजी बहतीहैं उसके दर्शन से ही तत्काल पाप नष्ट हो जाते हैं कीर्त्तन से शाप से छूट जाय, दर्शन से मंगल कार्य्यों को देखे, और स्नान पान से अपनी सात पीढ़ियों सहित पवित्र होता है। गंगा स्नान करता हुआ ब्रह्मचर्य्य से प्रयाग में एक मास अर्थात् मकरसंक्रांति भर वास कर पितृ और देवों का तर्पण करने से मनोवांछित फलको पाता है। सूर्यकी पुत्री तीनों लोकों में विख्यात यमुना नदी जहां मिली है वहीं शिवजी सदा वास करते हैं। जो प्राणी नरक के दुःख और यम की यातना भोगने से हाय हाय करते हैं, उनके कुल में यदि कोई त्रिवेणी में स्नान करके तर्पण करता है तो वे तत्काल स्वर्ग को चले जाते हैं।

तृतीय अध्याय।

हे राजन्! प्रयागराज का और भी माहात्म्य सुनो, जो कोई दुःखी, दरिद्री, रोगी, क्रोधी भी त्रिवेणी में नहाते हैं वे सुवर्णसी देह पाकर अप्सराओं के साथ बहुत काल तक स्वर्ग भोगते हैं। तीर्थ में जाकर मनुष्य को उचित है कि इन्द्रियों को वशमें करे, जूता न पहने, गायत्री मंत्र को जपे, एकादशी आदि का उपवास करे, तेल न लगावे, यथा शक्ति दान करे, दान ग्रहण न करे, क्रोध को छोड़दे वही तीर्थराज के फलको पाता है। कपिला गौ का दान सोने के सींग, रूपे के खुर कंठमें वस्त्र रत्नों

की पूंछ, तांबे की पीठ, कांसी की दोहनी समेत करे, इसके दान से अनन्त फल मिलता है। जो अपने साथ तीर्थ यात्रा के निमित्त स्त्री पुत्रादि को भी अपने साथ ले जाता है, उनसे भी दान कराता है वह रूप, गुण, धन धान्य से संयुक्त हो अनेक वर्षों तक कुरु देशों का अधिकारी होता है। तीर्थ में स्नान करके मुण्डन करावे और देवताओं व पितरों का तर्पण करें। अक्षयवट के नीचे जाकर जो प्राण त्याग करताहै वह सीधा शिव-लोक को जाता है। हे भारत राजशार्दूल प्रयाग से पुनीत तीनों लोकों में कोई और तीर्थ नहीं है तीर्थराज के नाम सुनने से, संकीर्त्तन से, मृत्तिका लगाने से मनुष्य घोर पाप से मुक्त होजाता है। जो त्रिवेणीपर अभिषेक करे तो उसको राजसूय और अश्वमेध यज्ञों के तुल्य फलकी प्राप्ति होती है। प्रयाग में मरने वालों की योगियों कीसी गति होती है। वहां मरने से कैवल्य पद प्राप्त होता है जो देवताओं को भी दुर्लभ है। यमुना के दक्षिण तट पर कम्बल और अश्वतर नाग हैं। वहां स्नान आचमन करके मनुष्य सब पापों से छूट जाता है और शूल कोटेश्वर शिवजी के दर्शन मात्र से बीस पीढ़ी तर जाती हैं। वहां पुष्प नाभ के चढ़ाने से १०० अशर्फियों के चढ़ाने का फल प्राप्त होता है। गंगाके पूर्व में तीनों लोकों में विख्यात सामुद्र कूप है। यदि पुरुष वहाँ ब्रह्मचर्य पूर्वक शुद्ध मन से तीन

रात्रि वास करे तो अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त होता है। गंगा के उत्तर की ओर हंसप्रपतन नामक स्थान है। हे भारत! वहां स्नान मात्र से अश्वमेध का फल मिलता है और जब तक सूर्य चन्द्र हैं तब तक स्वर्ग में वास करेगा। फिर बासकी के उत्तर और भोगावती में जाकर दशाश्वमेध नामक तीर्थ में स्नान करै अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त होता है और स्वर्ग में जाता है। सर्व तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थराज प्रयाग और सब नदियों में पाप नाशिनी गंगा है।

चतुर्थ अध्याय।

श्रीमार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन्! गगा के उत्तर तटपर मानस नाम तीर्थ है, तीन रात्रि उपवास करके सब कामनाओं को प्राप्त होय। गौ, पृथ्वी तथा सुवर्ण दान करने का जो फल मिलता है वह केवल इस तीर्थके स्मरण मात्र से प्राप्त होता है। एक लाख गौ दान का फल होता है वही प्रयाग में माघ मास में तीन दिन स्नान करने से प्राप्त होता है। जो आदमी गंगा जमुना के बीच में जितेंद्रिय होकर बिना अग्नि सेवनके माघ मास में निवास करता है तो वह उसकी देह में जितने रोम हैं उतने ही हजार वर्ष स्वर्ग में वास करै। चन्द्र ग्रहण में त्रिवेणी स्नान करने से सब पापोंसे मुक्त होकर छियासठ हजार वर्ष चन्द्रलोक में रहता है। यमुना के उत्तर तट में

और प्रयागके दक्षिणमें ऋण प्रमोचन नाम परम तीर्थ है, वहाँ एक रात्रि उपवास करके स्नान कर सब ऋणों से छूट जाता है फिर सूर्यलोक को प्राप्त हो और सदा अनृण रहे।

पञ्चम अध्याय।

मार्कण्डेय बोले—हे राजन! अनाशकका फल सुनिये कि जितेन्द्रिय श्रद्धालु ऊपरके सब लोकोंके सुख को भोग कर इक लोकमें राजा होता है। सातों द्वीपों का राज्य भोग फिर प्रयाग में मरकर वैकुण्ठ में भगवान के समीप निवास करने का अधिकारी होता है। वह पुरुष अपने कुल की बीस पीढ़ियोंको तार देता है। पांच योजन लम्बा चौड़ा प्रयागजी का मंडल है उस भूमि में प्रवेश करने मात्र से ही पद पद पर अश्वमेध का फल मिलता है। जो वहाँ प्राण त्यागताहै उसकी सात मृत पीढ़ी और १४ आगे होने वाली पीढ़ियां तर जाती हैं। युधिष्ठिर बोले हे मुने! स्नेह से, द्रव्य के लोभ से, काम वश पुरुष प्रयाग जाय तो फल कैसे हो? मार्कण्डेय बोले हे राजन! किसी बहाने से जो भी प्रयाग जाता है उसको भी यात्रा का चौथाई फल मिल जाता है। हे राजन्! जिस पुरुष ने मनुष्य लोक में केवल अधर्म ही संचय किया हो और विश्वास घाती हो वह भी यदि तीन मासतक कठिन व्रत धारणकर त्रिवेणी में स्नानकरै तो पातकहीनहोकर प्राण

छोड़े और जो अज्ञानता वश तीर्थ यात्रा करे तो वह भी स्वर्ग में जाता है और फिर जब धर्म क्षीण हो तब वह मनुष्य लोक में धनाढ्य घर में जन्म लेकर विपुल सम्पत्ति का अधिकारी होता है, और जो ज्ञानवान् हैं और वे तीर्थ यात्रा करते हैं उनका तो कहनाही क्या है।

छठवां सातवां अध्याय।

मार्कण्डेयजी बोले कि हे महाभाग! सूर्य की पुत्री तीनों लोकों में विख्यात यमुना नदी जहां गंगा के साथ इकट्ठी होकर स्वर्ग को गई है वह स्मरण व कीर्त्तन से सब पापों को क्षय करने वाली है। उसमें स्नान आचमन करके आदमी निष्पाप हो जाता है, यमुना के दक्षिण तट पर अग्नि तीर्थ विख्यातहै और पश्चिम तटपर असरकतीर्थ है, उसमें स्नान करने से सीधा स्वर्ग लोक को जाता है और मरकर फिर जन्म धारण नहीं करता। हे भूपते! उसके पश्चिम में वीर तीर्थ है उसमें स्नान कर पुरुष रजोगुण रहित होकर वीर लोक को प्राप्त होता है, दक्षिण ओर विष्णु भगवान माधव नाम से विख्यात हैं, उनके नीचे के तीर्थ में भक्ति पूर्वक विधि सहित स्नान कर माधव भगवान का पूजन करे तो विष्णुलोक को जाय। पूर्व दिशा में सोम तीर्थ है वहां सोमेश्वर का पूजन कर सोमलोक को जाता है। उससे पूर्व कुवेर तीर्थ है वहां स्नान करने से स्वर्ग जाता है। सोम तीर्थके पश्चिम ओर

सूर्य तीर्थ है वहां स्नान करने से सूर्यलोक को जाता है। उसके पश्चिम में परम पावन वारुण तीर्थ है वहां स्नान करनेसे सब पापों से मुक्त हो जाता है। उसके पश्चिम में वायु तीर्थ है वहां स्नान करने से वायु पीड़ा नहीं होती, उत्तर ओर गौ तीर्थ है वहां स्नान करने से गौ लोक को जाता है, यमुना तटपर निरंजन नामक तीर्थ है वहां इन्द्र सहित सब देवता सन्ध्याको आकर नित्य उपासना करते हैं और उसकी सेवा भरद्वाज मुनि सदा करते रहते हैं।

अष्टम अध्याय।

मार्कण्डेयजी बोले-हे राजन्! जिस प्राणी की हड्डी त्रिवेणी में पड़ जांय वह सदा स्वर्ग जाताहै। इसपर मुझे एक पुराना इतिहास यादहै सो आप सुनिये। विन्ध्याचल के जंगलमें एक पापी व्याध रहता था वह मरगया तब यमदूत आकर उसको यमलोक ले गये, यमराज उसको कष्ट दें परन्तु कष्ट पहुँचे नहीं, इतने ही में ब्रह्मा के गणों ने उसे ब्रह्मलोक में चलने के लिये कहा। यमराज के पूछने पर ब्रह्माजीने कहा कि एक यात्री अपने पिता की हड्डी डिब्बे में लिये जारहा था मार्ग में चोर ने डिब्बेको लूट लिया। चोरने आगे जाकर उस डिब्बेको खोला तो उसमें सिवाय हड्डियों के और कुछ न मिला तो उसने हड्डियां वहीं फेंक दीं, उधर यात्री दुखी होकर वहां से चला, चलते २ उसको हड्डियां मिलीं उन्हीं हड्डियोंमें उस

व्याध की भी हड्डी जो वहां पड़ी हुई थीं मिलगईं, यात्री ने उनको इकट्ठा कर प्रयागराज में आकर श्रद्धा पूर्वक त्रिवेणी संगममें गेर दिया, सो हे यमराज! प्रयागजी में इस व्याधकी हड्डी गिरनेके कारण से ही मेरे लोक के योग्य हुआ है।

नवम अध्याय।

युधिष्ठिर बोले कि हे देव! आप अब गंगाके किनारे के तीर्थों का वर्णन और कीजिये। मार्कण्डेय बोले कि वट के पास सारस्वत नाम तीर्थ है वहां स्नान करने से सारस्वत लोक मिलताहै। उसके आगे अभितीर्थ है वहां आराधन करने से यशस्वी पुत्र मिलता है। उससे आगे वहार्चसि तीर्थ है वहां स्नान करनेसे पूर्ण विद्याका अधिकारी होता है, उसके आगे विश्वामित्र का तीर्थ है वहाँ स्नान करने से गायत्री जपका फल मिलताहै, इसके आगे इन्द्र तीर्थ है वहां पितृ तर्पण करने से अपने पितामहों को इन्द्रलोक में पहुँचाता है उसके आगे दशाश्वमेधादि तीर्थ हैं, यहां स्नान करने से यज्ञ न करनेके पाप से छूट जाता है। वहां से आगे राल तीर्थ है वहां स्नान करनेसे स्वरुप पावन होताहै। उसके आगे नल तीर्थ है वहां स्नान करने से राजपदको प्राप्त होताहै उसके आगे परमपुनीत उर्वशी तीर्थ है वहां स्नान करने से मरने पर उर्वशीलोक मिलता है तदनन्तर अरुन्धती तीर्थ है वहां स्नान करने से मरने

पर मुनियों का लोक मिलता है, उसके आगे जगविख्यात यज्ञ तीर्थ है वहाँ स्नान करनेसे सब यज्ञका फल मिलता है और मरकर ब्रह्मलोक का जाता है। और भी सैकड़ों हजारों तीर्थ हैं। उस तीर्थराजका आश्रय लेकर स्नान मात्र से मन वांछित फल पाता है।

दशम अध्याय ।

मार्कण्डेयजी बोले—हे राजन्! तीर्थराजमें यदि कोई पाप करे तो उसको पापका महाफल मिलताहै। युधिष्ठिर बोले कि प्रयाग में किये हुए पाप की निवृत्ति किस प्रकार हो। मार्कण्डेय बोले पापी मनुष्य भी त्रिवेणी पर प्राण छोड़ देनेसे शुद्ध होजाताहै। मार्कण्डेय बोले हे महाभाग! कल्पांत में महादेवजी संसार का संहार करते हैं तब भी प्रयाग नष्ट नहीं होता है। बट वृक्षपर स्वयं विष्णुभगवान् बाल्यावस्था में शयन करतेहैं, इतना सुन युधिष्ठिर बोले, हे मुने! मुझे यह बतलाइये कि वहां सदैव ब्रह्मा विष्णु महादेव आदि क्यों रहते हैं, मार्कण्डेय बोले कि हेराजन्! प्रयाग मण्डल का विस्तार पांच योजनकाहै, उसकी रक्षा और पाप कर्म्मों की निवृत्ति के लिये देवता लोग सदैव रहते हैं। प्रतिष्ठान से उत्तर शाल्मली है उस रूपसे ब्रह्मा सदा प्रयाग की रक्षा करता है, महादेव बट वृक्ष होकर रहते हैं और विष्णु भगवान् माधवरूप से प्रयागकी रक्षा करते हैं, इससे हे कुन्तीके पुत्र! तुम सब कुटुम्बियोंसमेत

प्रयाग को जाओ और वहाँ स्नान करो। राजा युधिष्ठिर ने तब सब बन्धु बान्धवों के साथ प्रयाग में स्नान करके एक लाख गौ का दान किया। स्नान करने से उनके सब पाप कट गये और वह शान्ति को प्राप्त हुए।

एकादश द्वादश अध्याय।

सूतजी बोले हे शौनक! अन्तःकरण की शुद्धिबिना स्नान फल नहीं होता इसीलिये मनके शुध्यर्थ स्नानविधि वर्णन करते हैं विद्वान मन्त्र जानने वाला मूलमंत्र नमो नारायणको उच्चारणकर और प्रथम तीर्थराज में जाकर पंडा से सङ्कल्प कराके सर्व मुंडन करावै फिर आचमन करके स्नान सङ्कल्पकर कुशाको हाथमें लेकर [पवित्री पहन कर] हाथजोड़ भागीरथी गंगाजी की स्तुति करे। विष्णुके पाद से उत्पन्न वैष्णवी, त्रिपथगा, जाह्नवी, नन्दिनी, नलिनी पक्षा, पृथ्वी, त्रिहाग, विश्वकाया, अमृता, शिवा, विद्याधरी, विश्वप्रसादिनी, क्षमा, भागीरथी, शान्ती, शान्तिप्रदायिनी गंगा, इन नामोंको प्रथम हाथजोड़ उच्चारणकरै तो सम्पूर्ण तीर्थोंके स्नानका फलमिलेगा। सातबार इन नामोंको हाथ जोड़ उच्चारणकरै और तीन-चार-पांच-सात बार अंजली देकर स्नानकरे। स्नानके बाद इस मंत्रसे मृत्तिका या भस्म धारणकर आचमन संध्योपासन नित्यकर्म करके स्वच्छवस्त्र धारणकर त्रैलोक्यकी तृप्तिके लिये तर्पणकरे। देवता, यक्ष-नाग, गंधर्व, सर्प, सुसर्प, तक्षक, जंबूक, खग, अन्तरिक्ष में चलने

वाले, जल में वास करने वाले, आकाशगामी निराधार जितने जीवहैं जो पाप या पुण्यमें रत उनकी तृप्ति के लिये मैं जल देता हूं संस्कार किये या असंस्कार किये जीव इससे तृप्तहोवें। फिर मनुष्य और ब्रह्मपुत्र सनक,सनन्दन, सनतकुमार, सनातनको जलदेवै इसीप्रकार सन्तुष्ट मनहोकर श्रद्धायुक्त पित्रोंको जलदेकर तर्पण करे इस मंत्रसे सूर्य भगवानको जलदेवै—"नमस्तेविष्णुरूपाय नमोविष्णुमुखायवै।
सहस्ररश्मनेनित्यं नमस्तेसर्वतेजसे ॥"

इस मंत्रसे सूर्य को अर्घ्य दे फिर ब्राह्मणका पूजनकरै अन्न धन वस्त्र यथा शक्ति दान देकर सन्तुष्ट करे नित्य अग्नि में हवन करे, इस प्रकार वास करने से अन्तःकरण शुद्ध होकर इस लोकमें आनन्द करके वैकुण्ठको जाता है।

कुम्भ माहात्म्य।

जिस समय देवासुरने समुद्रका मंथन किया और उसमें से अमृतका घट (कुम्भ) निकला, तब उस घटको देवता अपनी ओर खींचने लगे और असुर अपनी ओर,इस संघर्ष में वह घट झलक गया और थोड़ा २ अमृत चार जगह गिरा। इन्हीं चार जगहों पर कुम्भका स्नान होताहै। जिस वर्ष माघ भर मकर राशिमें सूर्य और वृहस्पति हो उसीवर्ष यह पर्व आता है। इस अवसर पर माघ भर स्नान करने से मनुष्य अक्षय पुण्य का भागी होता है, और मृत्यु समय भगवान् के पार्षद आकर उसे विमान में बिठाकर सीधे स्वर्ग लोक ले जाते हैं।

श्रीगंगा जी की आरती ।

ओ३म् जय गंगे माता श्री जय गंगे माता ।
जो नर तुमको ध्याता जो नर तुमको ध्याता ।
मन वांछित फल पाता ओ३म् जय गंगे माता ॥१॥

चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी जल निर्मल आता ।
शरण पड़े जो तेरी शरण पड़े जो तेरी ।
सो नर तर जाता, ओ३म् जय गंगे माता ॥२॥

भव सागर से तारे सब जग को ज्ञाता ।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, कृपा दृष्टि तुम्हारी ।
त्रिभुवन सुख दाता, ओ३म् जय गंगे माता ॥३॥

एक ही बार जो तेरी शरणागत आता ।
यमकी त्रास मिटाकर यमकी त्रास मिटाकर ।
परम गति पाता, ओ३म् जय गंगे माता ॥४॥

आरती माता तुम्हारी जो जन नित गाता ।
अर्जुन वही सहज में अर्जुन वही सहज में ।
मुक्ति को पाता, ओ३म् जय गंगे माता ॥५॥

* स्नान के पर्व *

पौष सुदी १५ ता० १ जनवरी माघ स्नान प्रारम्भ ।
माघ बदी ११ मंगलवार ता० १३ जनवरी कुम्भ स्नान ।
माघ बदी १५ शुक्रवार १६ जनवरी मौनी अमावस्या ।
माघ सुदी ५ बुधवार ता० २१ जनवरी बसंतपंचमी ।
माघ सुदी ८ शनिवार ता० २४ जनवरी भीमाष्टमी ।
माघ सुदी १२ गुरुवार ता० २८ जनवरी भीष्मद्वादशी ।
माघ सुदी १५ रविवार ता० १ फरवरी स्नान समाप्ति ।

* इति *

यह अमूल्य औषधि पूर्ण वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर निर्मितहै निर्वलता दूर करने की सर्व श्रेष्ठ औषधें जो आजतक वैज्ञानिकों ने निश्चित की थीं प्रायः उन सबके संमिश्रण से यह औषधि तैयार की गई है, इसी से प्रत्येक प्रकार की निर्वलता को दूर कर शरीरको यौवनकी सारी समृद्धियोंसे परिपूर्ण करनेमें अद्वितीयहै।

शरीर में शक्ति उत्पन्न करने वाले अवयवों के सम्बन्ध में संसार के धुरन्धर वैज्ञानिकोंकी खोज और भारतवर्षकी जलवायु तथा परिस्थिति के पूर्ण अनुभव के आधार पर सुनहरी गोलियों के रूप में यह औषधि निर्माण की गई है जिससे कड़वी और बदजायकेदार दवासे बचने वाले भी सरलतासे सेवन कर सकें।

जिनका यौवन समयसे पूर्व ही समाप्त होगया है, अथवा जिन्हें शरीर में अधिक शक्ति और तेजकी आवश्यकताहै या वृद्धावस्था के कारण जिनका शरीर अशक्त और निस्तेज होगया है, या जिन्होंने युवावस्था से पूर्व ही अपनी नासमझी से अपने पुरुषत्व को नष्ट कर जीवन को भार रूप समझ लिया है और निर्वलता के कारण आये दिन हाथ पैरों में झनझनाहट, सिर में दर्द, किसी काममें मन न लगना, दिमाग की कमजोरी आदि उपद्रवों से दुखी रहते हैं, इन सबके लिये यह औषधि संजीवनी है। क्योंकि उपरोक्त कष्टों को दूर करनेकी इसमें अपूर्व शक्ति है। यह गोलियां सेवन करते ही रसायनिक क्रियाओं द्वारा शरीर में शक्ति उत्पन्न करती है और इस प्रकार उत्पन्न हुई शक्ति चिरस्थायी होती है। यह हृष्ट-पुष्ट और फुर्तीला बनाती है। स्नायविक दुर्बलता अथवा इन्द्रियों की शिथिलता व दुर्बलता नष्ट कर चहरे को कान्तिवान बनाती है। प्रत्येक अवस्थामें यह पुरुषोंके लिये महान उपकारी है। २५ गोली का मूल्य २॥) रु० डाक खर्च ॥=)

सुख संचारक कम्पनी लि० मथुरा।

आयुर्वेदीय औषधियों का वृहद् एवं विश्वसनीय कारखाना

सिर्फ टाईटिल कवर. सुन्दर श्रृङ्गार एलैक्ट्रिक मशीन प्रेस मथुरा में छपा

॥ श्री ॥

प्रयाग महात्म्य ।

लेखक

जोगीश्वर प्रेमनाथ शर्म्मा

प्रकाशक

अन्तनाथ योगीश्वर शहर

इलाहाबाद मोहल्ला करनैलगंज

भारद्वाज ।

मूल्य दो पैसा] १९१८ [प्रथमवार ५,०००

Commercial Press, Allahabad.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

प्रयाग महात्म्य ।

युधिष्ठिर उवाच—

पृच्छामि त्वां महाप्राज्ञ ! नित्यं त्रैलोक्य दर्शिनम् ।
कथयत्वं समासेन येन मुच्येत् किल्विषात् ॥ १ ॥

अर्थात्—राजा युधिष्ठिरजी मार्कण्डेयजी के प्रति बोले कि, हे महाप्राज्ञ ! आप त्रिलोकी के देखने वाले हैं और सर्वज्ञ हैं आप मुझको सब पापों का नाश करने वाला कोई ऐसा उपाय संक्षेप से बताइये जिससे मेरा उद्धार हो ।

मार्कण्डेय उवाच—

शृणु राजन् ! महाबाहो सर्व पातक नाशनम् ।
प्रयाग गमनं श्रेष्ठं नराणां पुण्य कर्मणाम् ॥ १ ॥
ततः पुण्यतमं नास्ति त्रिषुलोकेषु सुतज ! ।
प्रयागं सर्व तीर्थेभ्यः प्रवदन्त्यधिकं द्विजाः ॥
श्रवणात् तस्य तीर्थस्य नाम सङ्कीर्तनादपि ।
मृत्तिकालम्भनाद्वापि सर्वं पापैः प्रमुच्यते ॥
तत्राभिषेकं यःकुर्य्यात् सङ्गमे संशितव्रतः ।
पुण्यं स महदाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः ॥

अर्थात्—मार्कण्डेय जी बोले कि, हे राजा ! मैं तुम से सब पापों के नाश करने वाले उपाय को कहता हूं श्रवण करो—

धार्म्मिक जनों को प्रयाग जाना बहुत श्रेष्ठ है। हे भारत! त्रिलोकी में प्रयाग जी से अधिक कोई पदार्थ भी पवित्र नहीं है, और यह तीर्थ अपने प्रभाव से सब तीर्थों से अधिक है। इस प्रयाग तीर्थ के नाम श्रवण करने से वा स्मरण करने से अथवा शरीर पर वहां की मृत्तिका लगाने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है और उस गङ्गा यमुना के स्पर्श करने से पुरुष पापों से मुक्त हो जाता है और जो अभिषेक करता है वह राजसूयअश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य के फल को पाता है।

युधिष्ठिर उवाच—

> यथा यथा प्रयागस्य महात्म्यं कथ्यते त्वया।
> तथा तथा प्रमुच्येऽहंसर्व्वं पापैर्नसंशयः॥
> भगवान्! केन विधिनागन्तव्यं धर्म्म निश्चयैः।
> प्रयागे योविधिः प्रोक्तस्तन्मे ब्रूहि महामुने॥
> मृतानां का गतिस्तत्र स्नातानां तत्र किम्फलम्।
> ये वसन्ति प्रयागेतु ब्रूहि तेषां च किम्फलम्॥

अर्थात्—युधिष्ठिर बोले कि हे मुने! जैसे २ आपने प्रयाग का महात्म्य कहा है वैसे हो वैसे मैं निस्सन्देह सब पापों से छूटता जाता हूं। हे भगवन्! अब आप मुझ से कहिये कि प्रयाग का किस विधि से यात्रा करना चाहिये, वहां मरने वालों की क्या गति, स्नान करने वालों को कौन फल और निवास (कल्पवास) करने वालों को क्या पुन्य मिलता है।

मार्कण्डेय उवाच—

कथयिष्यामितेवत्स ! यच्छ्रेष्ठं तत्रयत्फलम् ।
पुराहि सर्वं विप्राणां कथ्यमानं मया श्रुतम् ॥ ४ ॥
प्रयागतीर्थं यात्रार्थीयः प्रयातिनरः क्वचित् ।
वलिवर्दं समारूढ़ः श्रृणु तस्यापि यत्फलम् ॥ ५ ॥
नरके वसते घोरे गवां क्रोधाहि दारुणे ।
सलिलं न च गृह्णन्ति पितरस्तस्यदेहिनः ॥ ६ ॥
यस्तु पुत्रांस्तथा वालान् स्नापयेत्पाययेत्तथा ।
निष्फलं तस्य तत्सर्वं तस्माद्यानं विवर्जयेत् ॥ ७ ॥

अर्थात्—मार्कण्डेय जी बोले कि हे वत्स ! वहां का जो श्रेष्ठ फल है उसे मैं वर्णन करता हूं तुम ध्यान दे सुनो। जो प्रयाग तीर्थ की यात्रा करने वाला पुरुष प्रयाग जी में बैल की सवारी में जाता है वह घोर और दारुण नरक में जाता है उस के तर्पण किये हुए जल को भी पितर नहीं ग्रहण करते। जो मनुष्य बैल की सवारी में बालक पुत्रादिकों को स्नान करा कर वहां का जल पिलाता है और ब्राह्मण को ऐश्वर्य्य के मद लोभ और मोहादिकों से दान भी करता है ऐसे करने वाले पुरुष का दिया हुआ दानादिक सब निष्फल होता है इस हेतु से तीर्थ पर कभी सवारी में न जाना चाहिये।

मार्कण्डेय उवाच—

ततो गच्छेत धर्म्मज्ञ ! प्रयाग मृषि सम्मतम् ।
यत्र ब्रह्मादयो देवा दिशश्च सदिगीश्वरः ॥

सिर्फ टाईटिल कवर. सुन्दर श्रृङ्गार एलैक्ट्रिक मशीन प्रेस मथुरा में छपा

लोकपालाश्च सिद्धाश्च निरताः पितरस्तथा।
सनत्कुमार प्रमुखास्तथैव च महर्षयः॥
तथा नागाः सुपर्णाश्च सिद्धाश्च ऋतवस्तथा।
गन्धर्वाप्सरसश्चैव सरितः सागरास्तथा॥
हरिश्च भगवानास्ते प्रजापति भिरावृतः।
तत्र त्रीण्यग्नि कुण्डानि तयोर्मध्ये तु जह्नवी॥

अर्थात्—हे राजन्! प्रयाग जाने वाले मनुष्य को चाहिये कि वह प्रयाग तीर्थ का स्तुति करता हुआ पुरुष प्रयाग राज में जाय जहां कि ब्रह्मादिक देवता ऋषि, सिद्ध, चारण लोकपाल, साध्य संज्ञक देवता लोकों के पितर, सनत्कुमारादिक, परम ऋषि, अंगिरा आदि ब्रह्म ऋषि, नाग, सुपर्ण, सिद्ध गन्धर्व अप्सरा, समुद्र नदी, पर्वत, विद्याधर और साक्षात् विष्णु भगवान् ब्रह्मा जी समेत स्थिति हैं और तहां तीन अग्नि के कुण्ड हैं जिसके मध्य में जाह्नवी है।

युधिष्ठिर उवाच—

प्रयागात् समति क्रान्तासर्व्वं तीर्थ पुरस्कृता।
तपनस्य सुता तत्र त्रिषुलोकेषु विश्रुता॥
यमुना गङ्गया सार्द्धं सङ्गता लोक भाविनि।
गङ्गा यमुनयोर्म्मध्ये पृथिव्या जघनं स्मृतम्॥
प्रयागं जघनस्यान्तमुपस्थ मृषयो विदुः।
प्रयागं स प्रतिष्ठानं कम्बलाश्वतराबुभौ॥
तीर्थं भोगवती चैव वेदी प्रोक्ता प्रजापतेः॥

तत्र वेदाश्च यज्ञाश्च मूर्त्तिमन्तो महामते ! ॥ ।
प्रजापति मुपासन्ते ऋषयश्च महाव्रताः ।
यजन्ते क्रतुभिर्देवास्तथा चक्रधराः सदा ॥

अर्थात्—प्रयाग से ही निकली हुईं सब तीर्थों से नमस्कृत सूर्य्य की पुत्री श्री यमुना जी गंगा जी के संग में मिली हुई हैं गंगा यमुना के मध्य में पृथ्वी की जंघा कही हुई है। हे राज-शार्दूल। वही प्रयाग जी है। प्रयाग जी में कम्बल और श्वतर नाम दो तट हैं वहां भोगवती पुरी है वह प्रजापति की वेदी रेखा वर्णन करी है। हे युधिष्ठिर ! वहां वेद और यज्ञ मूर्ति-मान होकर ब्रह्मा जी की उपासना करते हैं। तपोधन ऋषि देवता चक्रधारी और राजा यहां सब यज्ञों करके प्रयाग की उपासना करते हैं।

षष्टिर्धन्वि सहस्राणि यन्ति रक्षन्ति जाह्नवीम् ।
यमुनां रक्षति सदा सविता सप्त वाहनः ॥ १५ ॥
प्रयागंतु विशेषेण स्वयं रक्षति वासवाः ।
मण्डलं रक्षति हरि सर्व्वदेवैश्च सम्मितम् ॥ १६ ॥
न्यग्रोधं रक्षते नित्यं शूलपाणिर्महेश्वरः ।
स्थानं रक्षन्ति वै देवाः सर्वे पाप हरं शुभम् ॥ १७ ॥

अर्थात्—श्री गङ्गा जी की रक्षा साठ हज़ार धनुष करते हैं, यमना जी की रक्षा सूर्य्य करते हैं, प्रयाग की रक्षा इन्द्र करते हैं, प्रयाग जी के मंडल की रक्षा देवताओं समेत विष्णु-

भगवान करते हैं, प्रयाग के अक्षयवट की रक्षा तो शिवजी करते हैं, और देवता लोग सब पापों के हरनेवाले स्थान की रक्षा करते हैं।

युधिष्ठिर उवाच—

आख्याहि मे यथा तथ्यं यथैवा तिष्ठति श्रुतिः।
केनवा कारणे नैव तिष्ठन्ते लोकसत्तमाः॥ १७॥

अर्थात्—युधिष्ठिर बोले हे मुने! जिस कारण से यह प्रसिद्ध है कि प्रयाग में ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्थित रहते हैं उस कारण को मेरे अर्थ यथार्थ रीति से वर्णन करो।

मार्कण्डेय उवाच—

प्रयागेनि वसन्तेते ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः।
कारणं तत्प्रवक्ष्यामि शृणुतत्व युधिष्ठिर॥ १८॥
पञ्च योजन विस्तीर्णं प्रयागस्यतु मण्डलम्।
तिष्ठन्ति रक्षणा यात्र पाप कर्म निवारणात्॥ २०॥
उत्तरेण प्रतिष्ठानाच्छुभ्रना ब्रह्मा तिष्ठति।
वेणीं माधवरूपीतु भगवांस्तत्र तिष्ठति॥ २१॥
महेश्वरो वटो भूत्वा तिष्ठते परमेश्वरः।
ततो देवाः स गन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः॥ २२॥
रक्षन्ति मण्डलं नित्यं पाप कर्म निवारणात्।
यस्मिन्जुह्वन्स्वकं पापं नरकञ्च न पश्यति॥ २३॥

अर्थात्—मार्कण्डेय जी कहते हैं कि हे युधिष्ठिर! प्रयाग में जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश क्यों रहते हैं उसका कारण

मैं तुमसे वर्णन करता हूं श्रवण करो। बीस कोस में प्रयाग के मंडल का विस्तार है। वहां पाप कर्मों के निवारण होने से उसकी रक्षा के निमित्त उत्तर की ओर प्रतिष्ठान तीर्थ में ब्रह्माजी, वेनीमाधव रूप से विष्णु भगवान् और शिवजी अक्षयवट रूप हो प्रयाग में स्थित हो रहे हैं। इन सब के सिवाय देवता, गन्धर्व, सिद्ध और परमऋषि यह सब पाप कर्म को दूर करके उस प्रयागजी के मंडल की रक्षा करते हैं जहां पर मनुष्य अपने सब पापों को त्याग कर कभी नर्क को नहीं देखता।

युधिष्ठिर उवाच—

> आप्रयागप्रतिष्ठानादापुराद्वासुकेर्ह्दात्।
> कम्बलश्वतरौ नगौ नागश्च वहुमूलकः।
> एतत्प्रजपतेः क्षेत्र त्रिषुलोकेषु विश्रुतम्॥
> तत्रस्नात्वादिवंयान्ति ये मृतास्तेऽपुनर्भवाः।
> ततो ब्रह्मादयोदेवा रक्षां कुर्वन्तिसङ्गताः॥
> दश तीर्थ सहस्राणि षष्टिकोट्यस्तथा पराः।
> तेषां सान्निध्यम त्रै व ततस्तुकुरुनन्दन !॥
> अन्ये च वहवस्तीर्थाः सर्व पाप हराः शुभाः।
> न शक्ताकथितुं राजन् ! वहुवर्ष शतैरपि।
> संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि प्रयागस्यतु कीर्तनम्॥

अर्थात्—प्रयाग प्रतिष्ठान से लेकर वाशुकी हृदतक जो कम्वल, अश्वतर और वहुमूलक नाम जो नाग स्थान है यह

सिर्फ टाईटिल कवर. सुन्दर श्रृङ्गार एलैक्ट्रिक मशीन प्रेस मथुरा में छपा

सब मिलाकर त्रिलोकी में प्रसिद्ध प्रजापति क्षेत्र कहाते हैं वहां स्नान करने से स्वर्ग मिलता है, मरण होने से पुनर्जन्म नहीं होता और वहां वास करने वालों की रक्षा ब्रह्मादिक देवता करते हैं। इस प्रयाग तीर्थ के समीप साठ करोड़ दश हज़ार तीर्थ वास करते हैं अतिरिक्त इसके हे राजन्! अन्य बहुत से यहां शुभ तीर्थ पापों के हरने वाले हैं उनको मैं सैकड़ों वर्ष में भी वर्णन नहीं कर सकता इस हेतु संक्षेप पूर्व्वक प्रयाग जी के महात्म्य को कहते हैं श्रवण करो।

युधिष्ठिर उवाच—

कम्बलाश्वतरौनागौ विपुलेयमुनातटे।
तत्रस्नात्वा च पित्वा च सर्व पापैः प्रमुच्यते॥
तत्र गत्वा च संस्थानं महादेवस्य धीमतः।
नरस्तारयते सर्वान् दश पूर्वान् दशापरान्॥
कृत्वाभिषेकन्तुनरः सोऽश्वमेध फलं लभेत्।
स्वर्गलोक मवाप्नोति यावदा भूत संप्लवम्॥

अर्थात्—कम्बल, अश्वतर और नागवाले जो यमुना के उत्तर तट हैं वहां स्नान कर जल पान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है और जहां महादेव जी स्थिति वहां जाकर मनुष्य यह पहली पीढ़ी के दश पुरुषों को और पिछली पीढ़ी के भी दश पुरुषों को पार उतार देता है। वहां अभिषेक् करने वाला मनुष्य अश्वमेध यज्ञ के फल को पाता है और प्रलयकाल तक स्वर्ग में वास करता है।

युधिष्ठिर उवाच—

पूर्वं पार्श्वंतु गङ्गाया त्रिपुलेकेषु भारत ।
कूपङ्जैवतु सामुद्रं प्रतिष्ठाञ्च विश्रुतम ॥
ब्रह्मचारी जित क्रोधस्त्रिरात्रं यदि तिष्ठति ।
सर्वं पाप विशुद्धात्मा सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥
उत्तरेण प्रतिष्ठानात् भागीरथ्यास्तु पूर्वतः ।
हंस प्रपतनं नाम तीर्थं त्रिलोक्य विश्रुतम् ॥
अश्वमेध फलं तस्मिन स्नान मात्रेण भारत ! ।
यावच्चन्द्रश्च सूर्य्यश्च तावत् स्वर्ग महीयते ॥

अर्थात्—हे भारत ! गङ्गा जी के पूर्व भाग में एक समुद्र-कूप त्रिलोकी में विख्यात है वहां ब्रह्मचर्य्य में स्थिति क्रोध से रहित जो तीन रात्रि वास करता है वह सब पापों से छूट कर अश्वमेध यज्ञ के फल को पाता है। गङ्गाजी के पूर्व की ओर उत्तर के स्थान में जो हंसप्रपतन नामक तीर्थ त्रिलोकी में प्रसिद्ध है, हे भारत ! वहां स्नानमात्र के ही करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। और जब तक सूर्य्य और चन्द्रमा रहते हैं तब तक स्वर्ग में वास करता है।

युधिष्ठिर उवाच—

उर्वशी रमणे पुण्ये विपुले हंस पुण्डुरे ।
परित्यजतियः प्राणान् शृणुतस्यापियत् फलम् ॥
षष्टिवर्ष सहस्राणि षष्टि वर्ष शतानि च ।
सेव्यते पितृभिः सार्द्धं स्वर्गलोके नराधिप ! ॥

अर्थात्—पवित्र उर्वशी रमण तीर्थ, विपुल तीर्थ पर और हंसतीर्थ पर जो प्राणों को त्यागता है वह पुरुष साठ हज़ार साठ सौ वर्ष तक स्वर्ग में वास कर पितरों के साथ आनन्द करता है।

युधिष्ठिर उवाच—

अथ सन्ध्या वटेरम्ये ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः।
उपवासी शुचिः सन्ध्यां ब्रह्मलोक मवाप्नुयात् ॥
कोट तीर्थं समासाद्य यस्तु प्राणान् परित्यजेत्।
कोटिवर्ष सहस्राणां स्वर्गलोके महीयते ॥
ततोभोगवतीं गत्वा वासुकेरुत्तरेणतु।
दशाश्वमेधकं नाम तीर्थं तत्रापरंभवेत ॥
कृताभिषेकस्तुनरः सोऽश्वमेध फल लभेत्।
धनाढ्योरूपवान् दक्षोदाता भवतिधार्मिकः ॥

अर्थात्—जो मनुष्य रमणीक सन्ध्यवट पर जितेन्द्रिय और पवित्र होकर संध्या के समय उपवास व्रत करता है वह ब्रह्मलोक को जाता है; और जो कोटतीर्थ पर प्राप्त होकर प्राणों को त्यागता है वह सैकड़ों किन्तु करोड़ों वर्षों तक स्वर्गलोक में वसता है जो मनुष्य वासुकी सर्प से उत्तर की ओर भोगवती नामक पुरी में जाकर दशाश्वमेध नामक तीर्थ पर अभिषेक करता है वह अश्वमेध यज्ञ के फल को पाता है और धनाढ्य, रूपवान, चतुर, दाता और महा- धार्मिक होता है।

युधिष्ठिर उवाच—

मानसं नाम तत्तीर्थं गङ्गाया उतरे तटे ।
त्रिरात्रोपोषितो भूत्वा सर्वं कामानवाप्नुयात् ॥
गो भूहिरण्य दानेन यत् फलं प्राप्नुयान्नरः ।
सतत् फलमवाप्नोति तत्तीर्थंस्मरते पुनः ॥
यमुने चोत्तरे कूले प्रयागस्यतु दक्षिणे ।
ऋणप्रमोचनं नाम तत्तीर्थं परमं स्मृतम् ॥
एकरात्रोषितः स्नात्वाऋणैः सर्वः प्रमुच्यते ।
स्वर्गलोकमवाप्नोति अनृणश्च सद भवेत् ॥

अर्थात्—गङ्गा जी के उत्तर तट पर मानसा नाम उत्तम तीर्थ है वहां तीन रात्रि उपवास करके मनुष्य सब पापों से छूट जाता है और सब मनोकामना भी सिद्ध हो जाती है । जो पुण्य कि गौ, भूमि और सुवर्ण दान से होता है वही पुण्य इस तीर्थ के स्मरणमात्र से होता है । यमुना के उत्तर तट पर प्रयाग जी से दक्षिण की ओर ऋणमोचनं नामक परम उत्तम तीर्थ है वहां एक रात्रि के वास करने और स्नान करने से सब पापों से छूट कर स्वर्गलोक में प्राप्त होता है और कभी ऋणी नहीं होता ।

युधिष्ठिर उवाच—

अग्नि तीर्थं मितिख्यातं यमुनादक्षिनेतटे ।
पश्चिमेधर्म राजस्य तीर्थन्तु नरकं स्मृतम् ॥
तत्रस्नात्वादिवंयन्ति ये मृस्तेऽपुनर्भवाः ।

एवं तीर्थ सहस्राणि यमुना दक्षिणे तटे ॥
उत्तरेण प्रवक्ष्यामि आदित्यस्य महात्मनः ।
तीर्थं निरंजनं नाम यत्र देवाः सवा सवाः
उपासतेऽस्मसन्ध्यां ये त्रिकालंहि युधिष्ठिर !।
देवाः सेवन्ति तत्तीर्थं ये चान्ये विबुधजनाः ॥
श्रद्धधानपरो भूत्वा कुरुतीर्थाभिषेचनम् ।
अन्ये च वहवस्तीर्थाः सर्व पापहरास्स्मृता ।
तेषुंस्नात्वादिवं यान्ति ये मृतास्तेऽपुनर्भवाः ॥

अर्थात्—यमुना के दक्षिण तट पर अग्निनामक प्रसिद्ध तीर्थ है और पश्चिम तट पर धर्मराज का तीर्थ नरक नाम से प्रसिद्ध है उसमें स्नान करने से स्वर्ग मिलता है और प्राण त्यागने से फिर जन्म नहीं होता ऐसेही यमुना के दक्षिण तट पर हज़ारों तीर्थ हैं अब उत्तर के तट पर सूर्य्य के निरंजन नाम वाले तीर्थ को कहते हैं जिसमें कि इन्द्र सहित सब देवता वास करते हैं वहुत से देवता त्रिकाल सन्ध्या की उपासना करते हैं वहुत से तीर्थ ही की उपासना करते हैं इससे तुम भी श्रद्धावान् होके उस तीर्थ के जल का अभिषेक कराओ, हे राजेन्द्र ! अन्य २ भी बहुत से तीर्थ हैं उसमें स्नान करने वाले स्वर्ग में जाते हैं ।

युधिष्ठिर उवाच—

सोम तीर्थं महापुण्यं महापातक नाशनम् ।
स्नान मात्रेण राजेन्द्र ! पुरुषास्तारयेच्छतान् ।

तस्मात् सर्व प्रयत्नेन तत्रस्नानं समाचरेत् ॥
कालिन्दी उत्तरे कुले जाह्नव्यां पश्चिमे तटे ।
स्थापितं शिवलिङ्ग च भरद्वाजेश्वरं शिवः ॥
महर्षिभिर्भरद्वाजोहविर्ध्याने चरन् पुरा ।
भरद्वाजेश्वरश्चैव ब्रह्मवर्चः प्रवर्द्धकः ॥

अर्थात्—हे राजेन्द्र ! एक महापवित्र सब पापों के हरने वाला सोमतीर्थ है वहां स्नान मात्र ही के करने से मनुष्य सैकड़ों पुरुषों का उद्धार कर देता है इस निमित्त वहां सब यत्नों से करना चाहिये । और यमुनाजी के उत्तर कोल और गङ्गाजी के पश्चिम तट पर भरद्वाजमुनि का स्थापित किया भरद्वाजेश्वर नामक शिवलिङ्ग है और वहां महाऋषियों से युक्त भरद्वाज जी सदा हवन और ध्यान में लगे रहते थे इनकी पूजा और दर्शन करने से ब्रह्मतेज की प्राप्ति होती है ।

युधिष्ठिर उवाच—

शृणु राजन् ! महा गुह्यं सर्व पाप प्रणाशनम् ।
मास मेकन्तुयः स्नायात् प्रयागेनियतेन्द्रियः ॥
षष्ठि तीर्थं सहस्त्राणि षष्ठि कोट्यस्तथापगाः ।
माघमासे गमिष्यन्ति गङ्गा यमुना सङ्गमम् ॥
गवांशतसहस्रस्य सम्यक दत्तस्यतत् फलम् ।
प्रयागे माघमासेतु त्र्यहस्नानाच्चुतत् फलम् ॥

अर्थात्—हे राजन्! अब सब पापों के नाशक महात्म्य महात्म्य को सुनो कि जो जितेन्द्रिय पुरुष एक महीने तक प्रयाग जी पर स्नान करता है वह सब पापों से छूट कर परम पद को पाता है क्योंकि माघ के महीने में गङ्गा यमुना के सङ्गम में साठ हज़ार तीर्थ और साठ करोड़ नदी प्राप्त हो जाती हैं और जो पुण्य एक लक्ष गोदान करने में होता है वही पुण्य माघ मास में प्रयाग जी के तीन दिन केवल गंगा स्नान में प्राप्त होता है।

युधिष्ठिर उवाच—

सर्व्वत्र सुलभा गङ्गा त्रिषु स्थानेषु दुर्लभा।
हरिद्वारं प्रयागं च गङ्गा सागर सङ्गमे॥ ७॥

अर्थात्—सब स्थानों में गंगा जी का प्राप्त होना तो सुलभ (सहल) हैं परन्तु हरिद्वार, प्रयाग और गङ्गा सागर के सङ्गम इन तीनों स्थानों में गंगा प्राप्त होना बड़ा दुर्लभ है।

युधिष्ठिर उवाच—

गङ्गायां भास्कर क्षेत्रे माता पितोर्गुरौ मृते।
आधाने सोमपाने च वपनं सप्तसु स्मृतम्॥ ८॥
केशानां यावती संख्या छिन्नानां जाह्नवी जले।
तावद्वर्ष सहस्राणि स्वर्गलोके महीयते॥ ९॥

गङ्गायां भास्कर क्षेत्रे मुण्डनं यो न कारयेत्
स कोटिकुल संयुक्त आकल्पं रौरवे वसेत् ॥

अर्थात्—गङ्गा जी पर, भास्करक्षेत्र में, माता
और गुरु के मरने पर मनुष्य जिस भाँति केश मुड़ा
और जो आनन्द गर्भाधान और सोमपान में होता है वही फल प्रयाग में भी सिर मुड़ाने का है क्योंकि जितने मुड़ाने वाले के सिर में बाल होते हैं उतने ही वर्ष तक वह स्वर्ग-लोक में वास करता है । जो नर गङ्गा जी पर और भास्कर क्षेत्र में मुण्डन नहीं कराता वह अपने कोटिकुल के सहित रौरव नर्क में आकल्प तक वास करता है ।

युधिष्ठिर उवाच—

इत्युक्त्वा स महाभागो मार्कण्डेयोमहातपाः ।
युधिष्ठिरस्य नृपतेस्तत्रैवान्तरधीयत ॥
य इदं श्रृणुयान्नित्यं तीर्थं पुण्यं सदा शुचिः ।
जातिस्मरत्वं लभते नाक पृष्ठे च मोदते ॥

अर्थात्—इस प्रकार से वह महातपवाले महाभागी मार्कण्डेय जी राजा युधिष्ठिर से प्रयाग की सम्पूर्ण कथा वर्णन कर वहां ही अन्तर्द्धान हो गये । जो पुरुष इस प्रयाग तीर्थ के महात्म्य को सदा पढ़ता और सुनता है वह सदैव पवित्र होकर अपनी जाति में स्मरण करने के योग्य होता है और स्वर्ग में प्राप्त होकर आनन्द करता है ।

॥ सम्पूर्ण ॥

सिर्फ टाईटिल कवर. सुन्दर श्रृङ्गार एलैक्ट्रिक मशीन प्रेस मथुरा में छपा

※ संग्रहीत ※

प्रयाग महात्म्य

जिसको

पण्डा रघुनाथ योगीश्वर जी ने बहुत परिश्रम से संग्रहीत करके यात्रियों के उपकारार्थ प्रकाशित किया।

—:०:—

बाबू विश्वम्भर दयाल के प्रबन्ध से विश्व प्रेस, प्रयाग में छपा।

सन् १९२३

चौथी बार १००००)

प्रयाग महात्म्य ।

इन्द्रादिवंद्य विबुधेन्द्र शिखामयोंद्रा पूर्णेन्दु चारुनयनार्चित पद्मास्रजलैः। ध्वस्तान्तराय तिमिरं कलपालपालं वन्दे गजेन्द्र वदनं सदनं शुभानां ॥

अथ माधव जी के ध्यान

श्रीमाधवं मुकुट कुण्डलकौस्तुभाढ्य स्वर्ण युक्तं गरुड़वाहन मप्रमेयं । शंखाब्ज चक्रसुगदायुधमप्रमेयं ध्याये चतुर्भुज महंकरुणास्मि तास्वं ॥

(अथमहात्म्य प्रारंभः)

मत्स्य पुराणोक्त

मार्कण्डेयउवाच ॥ शृणुराजन् महाबाहो सर्व पातक नशानम् ॥ प्रयाग गमनं श्रेष्ठंनराणाम्

पुण्य कर्मणाम् ॥१॥ ततः पुण्यतमँनास्ति त्रिपु लोकेषु मानद॥ प्रयागं सर्व तीर्थेभ्यः प्रवदन्त्य धिकं द्विजाः ॥२॥ श्रवणात्तस्य तीर्थस्य नाम संकीर्तनादपि मृत्तिका लम्भनाद्वापि सर्वपापै सशितप्रतः प्रमुच्यते ॥ पुण्यं समहादाप्नोति राजसूया श्वमेधयोः ॥४॥

अर्थ–युधिष्ठिर महाराज मार्कण्डेय मुनिजी से बोले कि हे मुने आप सर्वज्ञ और त्रिलोकी के वार्त्ता को जानने वाले हैं इससे आप मुझको सब पापें के नाश करने वाला कोई उपाय संक्षेप सेकहिये जिससे कि मैं पापें से उद्धार हो जाऊं। तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन्! हे महाबाहो! ऋषि लेग प्रयाग तीर्थ को सब तीर्थों से श्रेष्ठ कहते हैं। जिस प्रयाग के नाम सुनने से या नाम को कहने से या जिस प्रयागराज के मृत्तिका को शरीर में लेपन करने से मनुष्य सब पापों से मोक्ष हो जाते हैं और जितेन्द्रिय होकर जो गङ्गा यमुना के संगम में स्नान करते हैं सो राजसूय और अश्वमेध

यज्ञ का महत्पुण्य है उसको प्राप्त करते हैं। इससे हे मानद पुण्य कर्त्ता मनुष्यों को प्रयाग यात्रा करना सबसे श्रेष्ठ है इससे बढ़कर त्रिलोक में और कोई पुण्य कार्य्य नहीं है। वेद में भी इसका प्रमाण है।

सितासिते सरिते यत्रसंगतेतत्राप्लुतासोदिव मुत्पतन्ति ॥ ये वै तन्वा विसृजन्ति धीरास्ते जनासोऽमृतत्वं भजन्ते ॥

अर्थ-शुक्ल और कृष्ण नदी का (गंगा यमुना का) संगम जहाँ पर हुआ है वहाँ जो स्नान करते हैं सो स्वर्ग लोक को प्राप्त होते हैं और जो महात्मा उसी संगम में प्राण त्याग करते हैं सो मोक्ष को प्राप्त होते हैं अर्थात् जन्म मृत्यु से रहित हो जाते हैं।

देखिये कवि कालिदासजी ने भी क्या ही उत्तम कहा है:—

समुद्रपत्न्योर्जल सन्निपाते पूतात्मनामत्र किला भिषेकात्॥ तत्त्वावबोधेन विनापि भूयस्त नुस्त्यजां नास्ति शरीर बंधः॥

अर्थ-गङ्गा यमुना के संगम में स्नान करने से पवित्रात्मा जिन

पुरुषों का शरीर छूट जाता है वह लोग तत्त्वज्ञान (ब्रह्मज्ञान के) बिना भी मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं (इससे अब कोई सन्देह करें कि ब्रह्मज्ञान के बिना जाने मुक्ति कैसे हो सकती है) देखिये किसी विद्वान् ने क्या ही उत्तम दर्शाय दिया है।

त्रिदेवैक्यं ब्रह्मश्रुतिभि रविदुरयं निगदितं।
त्रिवेणी तद्दृश्याकृतिरत इहान्यन्नपरमम्
द्रवीभूतादेवा विधिहरि हराश्चात्रमिलिता:
प्रयाग श्रीतीर्थाधिपतिरवमां त्वं शरणागमम्॥

अर्थ ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी यही तीनों देवों के एकता को अदृश्य ब्रह्मरूप से वेद वर्णन करता है वही तीनों देवता जल रूप धारण कर गङ्गा यमुना और सरस्वती रूप से मिलने से उसी ब्रह्म की दृश्यमान मूर्त्ति त्रिवेणी हैं इस कारण त्रिवेणी से औरकोई बड़ा तीर्थ नहीं है । हे प्रयाग सब तीर्थों के राजा आप मेरी रक्षा करें मैं तुम्हारे शरण में हूं।

पद्मपुराण में लिखा है:—

अयोध्यामथुरा मायाकाशीकाँचीह्यवन्तिका।
पुरीद्वारावती चैव सप्तैता मोक्ष दायिका:॥

त्रिकोट्यस्साद्धं कोट्यश्चतीर्थानां भुवनत्रये ।
तेषांराजा प्रयागोऽस्ति पट्टराज्ञ्यश्चमामता:॥
पुर्य्य: सप्तप्रसिद्धा: प्रति वचनकरी तीर्थ
राजस्य नार्य्यो नैकट्यान्मुक्तिदाने प्रभवति
सुगुणाकाश्यतेब्रह्मयस्यां ॥ सेयंराज्ञी प्रधान॥
प्रियवचनकरी मुक्तिदानेन युक्ता येनब्रह्माण्डं
मध्ये सजयति सुतरां तीर्थ राज: प्रयाग: ॥

इसी अभिप्राय को लेकर किसी विद्वान ने लिखा है:-

त्रिकोट्यस्तीर्थानाम जनिषत सद्धांस्त्रिभुवने
महाराजस्तेषां त्वमसि तवय : सप्तपुरिका: ॥
महिष्योयोध्याद्यास्त्वदनुमतितस्ताश्रम् तदा:
प्रयाग श्रीतीर्थाधिपति रवमांत्वं शरणगम् ॥

अर्थ-अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, विष्णुकांची, उज्जैन,
द्वारिका येह सातों पुरी तीर्थ राज प्रयाग की पटरानी हैं वे भी

ही तीर्थराज की आज्ञा से मुक्ति देती है। संसार में साढ़े तीन करोड़ तर्थ हैं इन सब तीर्थों के राजा प्रयाग हैं इस कारण इन प्रयाग को तीर्थराज कहते हैं। इससे यह प्रयाग राज से बढ़कर और कोई तीर्थ नहीं है।

प्रयागेत्याख्याते दशतुरग यागाद्विधिकृताच्छ्रयन्तित्वां माघे सकल मुनितीर्थामरगणाः ॥ अतो माघे स्नानात् त्वपि सकल तीर्थाटन फलम् प्रयाग श्रीतीर्थाधिपति स्वमांत्व-शरणागम् ॥

अर्थ—ब्रह्माजी के दश अश्वमेघ यज्ञ करने से प्रयाग ऐसा नाम पड़ा। माघ के महीने में सब मुनि तीर्थ और सब देवता लोग आकरके इसी प्रयागराज के आश्रय लेते हैं इसलिये माघ महीने में यहाँ स्नान करने से सम्पूर्ण तीर्थों का फल मिल जाता है। हे प्रयाग तीर्थराज मैं आप के शरणागत हूं मेरी रक्षा कीजिये।

श्रुतिः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं पुराणमप्यत्र परं प्रमाणं ॥ यत्रास्ति गंगा यमुना प्रमाणं

सतीर्थराजो जयति प्रयागः ॥

अर्थ-जिस तीर्थराज में वेद प्रमाण है, स्मृति प्रमाण है, जहां पर गंगा और यमुना का प्रत्यक्ष प्रमाण है वही तीर्थराज प्रयाग सब के ऊपर विद्यमान हैं।

नयत्र योगा चरण प्रतीक्षा नयत्रा यज्ञेष्टि विशिष्ट दीक्षा ॥ नतारक ज्ञानगुरोरपेक्षा सतीर्थ राजो जयति प्रयागः ॥

अर्थ-जिस तीर्थराज में योगादिकों को करने का कोई प्रयोजन नहीं जहांपर यज्ञादिकों का ओर दीक्षा का भी कोई प्रयोजन नहीं वही तीर्थराज प्रयाग सब के ऊपर विद्यमान हैं।

यत्रप्लुतानां नयमोनियंता यत्रास्थितानां सुगति प्रदाता । यत्राश्रितानाममृत प्रदात सतीर्थराजो जयति प्रयागः ।

अर्थ-यमराज जिस तीर्थराज में स्नान करनेवालों के (नियंता) दंड देने वाले नहीं हो सकते। जहां पर वास करने

वालों के यमराज सद्गति दायक होते हैं जहां पर आश्रित लोगों के मोक्षदाता होते हैं वही तीर्थराज सबके ऊपर विद्यमान है।

तीर्थावली यस्यतु कण्ठभागे दानावली वल्गति पादमूले। व्रतावली दक्षिण पाद मूले सतीर्थराजो जयति प्रयागः॥

अर्थ—जिस तीर्थराज प्रयाग के कंठदेश में सम्पूर्ण तीर्थ उछल रहे हैं। समस्त दान जिसके पाद मूल में उछल रहे हैं। सम्पूर्ण व्रत जिसके दहिने पाद मूल में उछल रहे हैं। तात्पर्य्य यह है कि तीर्थराज प्रयाग में जो स्नान करते हैं मानों वे सब तीर्थ कर चुके सब दान दे चुके और सब व्रत भी कर चुके वही तीर्थराज प्रयाग सबके ऊपर विद्यमान हैं।

सितासिते यत्र तरंग चामरे नद्यौ विभाते मुनि भानु कन्यके। नीलात पत्रं वटएव साक्षात् सतीर्थ राजो जयति प्रयागः॥

अर्थ जहां पर तीर्थराज प्रयाग के गंगा और यमुना जी के तरंग रूप सफेद और श्याम रंग के दो चंवर शोभित हो रहे हैं। नील वर्ण के छत्र के रूप से साक्षात् अक्षयवट शोभित हो रहे हैं वही तीर्थराज प्रयाग सब के ऊपर विद्यमान है।

मार्कण्डे जी युधिष्ठिर जी से कहते हैं:—

मार्कण्डेय उवाच ।

शृणुराजन् महागुह्यं सर्व पाप प्रणाशनम् । मासमेकंतुयः स्नायात्प्रयागेमोक्षमाप्नुयात॥ षष्ठि तीर्थ सहस्राणि षष्ठि कोटयस्यथापगा: ।माघ मास गांमष्यंतिगंगायोमुन स ंगमम् ॥ गवां शतसहस्रस्य सम्यक् दत्तस्य यत्फलम् । प्रयागे माघमासेतुत्र्यहं स्नानात्तुतत्फलम् ॥

अर्थ—हे राजन् ! अत्यन्त गुप्त और सब पापों के नाश करने वाला विषय को कहता हूं सुनो प्रयागराज में माघ महीना भर जो स्नान करते हैं सो मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं क्योंकि ६०००० तीर्थ और ३० कोटि नदियां माघ के महीने में गङ्गा यमुना के संगम में आती हैं । माघ महीने में संगम पर केवल तीन दिन भी स्नान कर ले तो एक लक्ष गोदान का फल मिलता है ।

सर्वत्र सुलभा गंगा त्रिषुस्थानेषु दुर्लभा ।
हरिद्वारे प्रयागे च गंगा सागर संगमे ॥

अर्थ—सब जगह गङ्गाजी का प्राप्त होना सहल है। परन्तु हरिद्वार, प्रयाग और गङ्गा सागर सङ्गम में बड़ा ही दुर्लभ है।

यह भी पद्मपुराण का वाक्य है:—

त्रिवेणी माधवं सोमं भारद्वाजं च वासुकिं ।
वन्दे ऽक्षयवटं शेषंप्रयागे तीर्थनायकम् ॥

अर्थ—प्रयागराज में अगणित देवता वास करते हैं परन्तु त्रिवेणी, जी माधव, सोमेश्वरनाथ, भरद्वाज, वाशुकी अक्षयवट और शेष इतने मुख्य हैं।

तावत्सन्निहिता मुक्तिर्यावत षटकूल दर्शनम्।

अर्थ—जहां से षटकूल (याने गङ्गाजी के दो पाट यमुना जी के दो पाट और गंगा यमुना का संगम के धारा का दो पाट) दिखाई पड़ता है वहांसे ही मुक्ति समीपवर्त्ती हो जाती है। मार्कण्डेयजी युधिष्ठिरजी से कहते हैं।

दुर्वासा: पूर्व भागे निवसति बदरीखंडनाथः
प्रतीच्यां पर्णाशो याम्यभागे धनद दिशितथा
मंडलेश्चतेमो।पंचक्रोशे त्रिवेण्याः परित इह
सदा सन्ति सीमान्त भागे सुक्षेत्रं योजनानां
शरमितम भितोभुक्ति मुक्ति प्रदं तत् ॥
तीर्थराज प्रयागास्य महात्म्यं कथयिष्यतः ।

अर्थः—अब पञ्चकोशी प्रयाग मण्डल का वर्णन करते हैं। त्रिवेणी से पांच कोश पर पूर्व की ओर दुर्वासामुनि रहते हैं। पाँच कोस पर पश्चिम तरफ बरखण्डीनाथ रहते हैं। दक्षिण तरफ पांच कोस पर पर्णाश मुनि रहते हैं (आजकल जिसको पनासा कहते है) उत्तर की ओर पांच कोस पर मडलेश्वरनाथ रहते हैं (आजकल जिसको पणिलानाथ) कहते हैं। प्रयाग मण्डल की चारों ओर अन्त २ भाग में ये सब हैं इस प्रकार चारों तरफ़ से पाँच योजन (बीस कोस) का प्रयाग मण्डल है यही संसार में सब सुखके देने वाला है और अन्त में परमपद (मोक्ष) को देने वाला है।

तीर्थराज प्रयगास्य महात्म्यं कथयिष्यतः।

शृण्वतःसतत भक्त्या वांछितं फल मवाप्नुयात्॥

अर्थ—तीर्थराज प्रयाग जी के महात्म्य को भक्ति से कथन करने वाले पुरुषों को और भक्ति से श्रवण करने वाले पुरुषों को इच्छित फल प्राप्त हो। मात्स्यपुराण
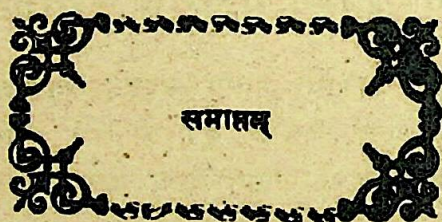
श्रीमद्भगवद्गीता

का

अपूर्व भाष्य (मूलतत्वसहित)

प्रथम अध्याय तय्यार है आकार डिमाई पृष्ठ १००
मूल्य ।||)

शेष अध्याय छप रहे हैं ।

मिलने का पता—

'विश्व' ग्रन्थालय-प्रयाग ।

॥ कवित्त ॥

लोक औ परलोक में सुख चाहो जो आप लोग तो करो स्नान श्री त्रिवेणी जो पै भड़ाके से। जरि है सब पाप जो जुरे अनेक जन्मन को होइ हैं सब सिद्ध काम तुमरो तब धड़ाके से। अर्थ, धर्म, काम मोक्ष मिलि हैं पदारथ चार रोग शोक दुःख जाल छुटि हैं जब पड़ाके से। वेद औ पुराण सब कहत हैं बार बार अन्त हूं बचि हो फेरि यमदण्ड के सड़ाके से ॥

अक्षयवट माहात्म्य

जिसमें

अक्षयवट के महाप्रलय की कथा और
उसके पूजन का फल वर्णन किया है।

जिसको मोहल्ला कर्नलगंज, इलाहाबाद निवासी
प्रेमनाथ योगीश्वर ने यात्रियों के
उपकारार्थ प्रकाशित किया

—:*:*:—

—:○*○:—

बाबू विश्वम्भर दयाल के प्रबन्ध से विश्व प्रेस,
प्रयाग में छपा।

सन् १६८०

नववीं बार १००००]

श्रीविश्व प्रेस, प्रयाग।

निम्न लिखित देवताओं के स्थान अक्षयवट के मन्दिर में विद्यमान हैः—

१ धर्मराज।
२ अन्नपूर्णा।
३ विष्णु भगवान।
४ महालक्ष्मी।
५ गौरी गणेश।
६ आदिगणेश।
७ बालमुकुन्द ब्रह्मचारी।
८ श्रीमान् प्रयाग राजेश्व महादेव।
९ शूलकण्ठकेश्वर महादेव।
१० अक्षयवट।
११ देव देव मार्ग।
१२ गौरीशंकर महादेव।
१३ सत्यनारायण।
१४ यमदंड महादेव।
१५ डंडपाणि भैरव।
१६ ललिता देवी।
१७ गंगाजी।
१८ नृसिंह भगवान।
१९ गुरू दत्तात्रैय।
२० सरस्वती।
२१ सूर्य्यनारायण।
२२ यमुनाजी।
२३ गुरू गोरक्षनाथ।
२४ जामवान।
२५ हनुमानजी।
२६ अनुसुइया देवी।
२७ श्यामकार्तिक।
२८ वेदव्यास।
२९ वरुण देवता।
३० पवन देवता।
३१ मार्कण्डे ऋषि।
३२ सिद्धनाथ महादेव।
३३ पारवतीजी।
३४ बेनीमाधो।
३५ कुबेर भण्डारी।
३६ अग्निदेवी।
३७ दूधनाथ महादेव।
३८ सोमतीर्थ।
३९ दुर्वाशा ऋषि।
४० रामलक्ष्मण।
४१ शेषजी।
४२ राजा इन्द्र का भंडार।
४३ यमराज।
४४ अनन्त माधो।

॥ अक्षयवट माहात्म्य ॥

त्रिवेणीमाधवं सोमं भारद्वाजं च बाशुकिम् ।
वन्दे ऽक्षयवटं शेषं प्रयागं तीर्थ नायकम् ।१।

अर्थ—गङ्गा यमुना, सरस्वती, त्रिवेनी श्री माधव जी सोमनाथ शिव और भारद्वाज मुनि, बाशुकी नाग और अक्षयबट और शेषजी ये प्रयाग में प्रधान देव हैं इसलिये इनका विशेष कर दर्शन करना चाहिये ।

देखो किसी विद्वान कवि ने क्या ही उत्तम कहा है:—

चल मन प्रयाग अक्षयवट दर्शन त्रिबेनी
पातक हरनी । मात पिता के बुड़की देकर
समझ चलो अपनी करनी ॥ २ ॥

अर्थ—हे मन ! अगर तुझे चलना है तो तू प्रयाग को चल जिसमें अक्षयबट का दर्शन मिले क्योंकि वहाँ त्रिवेनी जी पातक के हरने वाली विद्यामान हैं वहीं माता पिता पितरों के नाम की बुड़की (यानीस्नान कर) जैसा कि पुत्र पुत्री का अपने माता पिता के मरने के पश्चात करनी करने का कर्त्तव्य है उसे पालन करें जिससे उनकी सद्गति हो तब हम अपना अहो भाग्य समझें ।

पद्मपुराणान्तर्गत अक्षयवट माहात्म्य ।

ऋषय ऊचुः ॥ स्नानदानं जपो होमो यज्ञ व्रत तपांसिच । अनन्त फलदं सर्वं प्रयागे भव-तोदितं ॥

शौनकादि ऋषि लोग सूतजी से बोले कि आपने कहा प्रयाग में स्नान दान जप होम यज्ञ व्रत तप आदिक जो कुछ किया जाय सो सब अनन्त फल को देने वाले होते हैं ।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापियत् किंचित् सुकृतं कृतं ॥ अक्षयं जायते सर्वं माधवस्यप्रसादतः॥

ज्ञान से अज्ञान से जो कुछ सत्कर्म प्रयाग में किया जाय सो सब माधव की कृपा से अक्षय हो जाते हैं ।

प्रयाग मक्षयं क्षेत्र मक्षय्य तत्र भूमिका ॥ अक्षय्योहि वरोयत्र किं न तत्राक्षयं भवेत्॥

प्रयाग क्षेत्र कभी क्षय याने नाश नहीं होता प्रयाग की भूमि में भी अक्षय है जिस प्रयाग क्षेत्र के वर भी अक्षय है अर्थात् प्रयागक्षेत्र में जब कोई वर मिल जाय सो अक्षय होता है । प्रयाग में सब अक्षय है ।

अक्षय्यवट माहात्म्यं स्वरूपं पूजने फलं ॥
सर्वं वद सुनिश्चित्य तत्र तृष्णा यतेमनः ॥

अक्षयवट का क्या स्वरूप है उसको पूजन करने में क्या फल होता है और अक्षयवट का माहात्म्य ये सब निश्चय कर के कहिये ये सब विषयों में हम लोगों के मन तृष्णायुक्त है अर्थात् ये सब वार्तावों को जानने के लिये मन बहुत चाह रहा है। सूत उवाच

विष्णुना ब्रह्मपुत्रेभ्यो यत् प्रोक्तंमुनि पुंगवा। तत्सर्वं वर्णयिष्येहंवट माहात्म्य मुत्तमम् ।

सूत जी बोले हे मुनि लोग विष्णु भगवान् ने सनकादिकों को इस विषय में जैसा कहा वह सब अक्षयवट के उत्तम माहात्म्य मैं वर्णन करता हूं।

कदाचित् ब्रह्मणः पुत्राश्चत्वारः सनकादयः ।
गता बैकुंठ भवनं विष्णु दर्शन कांक्षिणः ॥

किसी समय ब्रह्मा के सन कादि चारों। पुत्र विष्णुभगवान के दर्शन की अभिलाषा से बैकुण्ठ धाम को जाते भये।

भगवानपि तान् दृष्ट्वा स्वागतं कृत्य भक्तितः ॥ उपवेश्यासनेष्वेतानुवाच मधुरं वचः ॥

भगवान उन सनकादिकों को सत्कार करके आसन में बैठा कर मधुरवाणी से बोलते भये ।

श्रीभगवानु वाच ॥ अपूर्वम् कथ्यतां विप्रा किंचित् ब्रह्माण्ड मंडले ॥ याता यातेषु यच्चित्रं दृष्टं मे भवदा दिभि: ॥

भगवान बोले हे मुनि लोग—यह मेरे चराचर ब्रह्माण्ड गोलक में आप लोगों ने आश्चर्य्य और अपूर्व याने नया जो कुछ देखा सो कहिये ।

सनकाद्य ऊचु: । वर्तंते सकलाऽश्चर्य्यं त्वय्यश्चर्य्यंमये बिभो । त्वयिदृष्टेऽखिला श्चर्य्य मस्माभिर्दृष्ट मेवतु ॥

सनकादिक मुनि लोग बोले । आश्चर्य्य मय अर्थात् आश्चर्य्य स्वरूप आप में संपूर्ण आश्चर्य्य वर्तमान है । सम्पूर्ण आश्चर्यबान् आप को जब हम लोग देखा तब सम्पूर्ण आश्चर्य्य को भी देख चुके ।

अथाप्येकं महाश्चर्य्यं प्रयागे दृष्ट मद्य वै । एको महान् वटो दृष्ट: सर्वा श्चर्य्य मयो हि स: ॥

तथापि प्रयाग क्षेत्र में आज एक महा आश्चर्य्य देखा सो यह है कि एक आश्चर्य्यमय बड़ा भारी वरगत का वृक्ष ।

पंचयोजन विस्तार: शत योम महाद्रुम: । मूलं न दृश्यते तस्य सप्त पातालगा जटा: ॥

पत्राणि रुक्मवर्णानि फलानि मधुराणिच ।
वैडूर्य्य सन्निभा छाया उपर्य्यंतो न विद्यते॥
तन्मूले को पि पुरुषस्तेजः पुंजान्वितो महान्॥
दृष्टश्चतुर्भुजःस्रग्वीश्यामः पीतांवरावृतः ॥

जो वृक्ष कि पांच योजन याने २० कोश विस्तार है सैकड़ों वरोह जिसमें है। जिसका जड़ दिखलाई नहीं पड़ता सप्त पाताल तक जिसका जड़ चला गया हैं। जिसका पत्ता सोने के ऐसे चमक रहा है जिसके फल अत्यन्त मधुर है जिसके छाया सघन है इतना ऊंचा है कि जिसका अन्त नहीं है वृक्ष का प्रमाण युगान्तर का है। इस समय का नहीं उस वृक्ष को मूल में कोई एक पुरुष है जो अत्यन्त तेजस्वी है। जिनके चार भुजा हैं जो कि श्याम वर्ण है पीताम्बर और माला पहिने हुए है।

तद्दृष्ट्वा महदाश्चर्य्यंभ्रमंतोबयमागताः ॥
त्वत् सकाशमिदानीं त्वं त त्सर्वंकथोआशुनः॥

उस महान् आश्चर्य्य को देखकर भ्रमते हुए हम लोग आपके समीप आये। आप कृपा करके उसका वृत्तान्त शीघ्र कहिये।

श्रीभगवानुवाच—भोभो ब्रह्म सुता यूयं श्रृणवं तुप्रणिधानतः ॥ तस्य क्षेत्रस्य वृक्षस्य स्व रूपं पुरुषस्य च ॥

हे ब्रह्मा के पुत्र लोग—आप सावधान होकर उस प्रयाग क्षेत्र का मूलस्थ पुरुष का और उस वृक्ष का स्वरूप सुनिये।

प्रयागं वैष्णवं क्षेत्रं बैकुंठादधिकं मम ॥
वृक्षोऽक्षय्य वट स्तत्र मदाधारो विराजते ॥
मूले यः पुरुषो दृष्टः सोहमक्षय्य माधवः ॥
वट माधव नामापि मूल माधव इत्यपि ॥
एवं त्रिनामा तत्राहं वसाम्यक्षय्यपादये
ब्रह्मादिभिः सुरैः सर्वैः सहितस्तीर्थ नायके ॥

प्रयाग वैष्णव क्षेत्र है मेरे वैकुंठ से भी अधिक है। जो वृक्ष आप लोगों ने देखा सो अक्षयवट है सो मेरे ही आश्रय से शोभित हो रहा है। उस वृक्ष के मूल में जो पुरुष देखा सो अक्षय माधववट माधव और मूल माधव यही तीनों नाम से मैं तीर्थराज प्रयाग के उस अक्षयवट की मूल में ब्रह्मादिक सब देवताओं के सहित निवास करता हूं।

सर्वं विघ्न विनाशार्थं भक्तानां कार्य्य सिद्धये ॥
दिग्विदिक्ष्वन्यरूपेण चाष्ट नाम्ना वसोम्यहं ॥
शंख चक्र गदा पद्मानंत विंदु मनोहरः ॥
असि माधव इत्यष्टो मन्नामानि निबोधत ॥

सब विघ्नों के निवारण के लिये और भक्तों के कार्य्य करने के लिये तीर्थराज के चारों तरफ अर्थात् दिशा और

त्रिदिशा में अन्य रूप से अष्ट नाम धारण करके निवास करता हूं। सो आठ नाम यह हैं शंख माधव. चक्र माधव गदा माधव पद्म माधव अनन्त माधव विन्दु माधव मनोहर माधव और असि माधव।

संकष्ट हर रूपेण भक्त संकष्ट नाशने ॥
सर्वत्र सर्वदातिष्ठे यथा कार्य्यं भ्रमन्नहं ॥

संकट हर रूप से भक्तों के संकट नाश के लिये सर्वत्र सर्वदा यानी हर जगह हमेशा जैसा कार्य्य आ, पड़ता है वैसेही रूप से भ्रमण करता हूं।

वेणीमाधव नामाहं गंगा यमुना संगमे ॥
मुख्यो वसामि भक्तानां धर्म कामार्थ मोक्षदः॥

गंगा यमुना के संगम स्थल में वेणीमाधव नाम से निवास करता हूं। और भक्तों को धर्म अर्थ काम और मोक्ष-दायक हूं।

सर्व रूपाणि संहृत्य,बाल रूपधर स्ततः ॥
ब्रह्माण्डमुदरे कृत्वा शयेन्तः क्षयपादपे ॥

संपूर्ण रूपों को संहार करके मैं बाल रूप धारण कर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को उदर में स्थापन 'करके अक्षयवट मध्य में शयन करता हूँ

तस्याहंकल्प वृक्षस्य स्वरूपं वेद्मि नापरः
प्रपंच वीजभूतस्य तद्धः सर्वं निरूपितं ॥

सब प्रपंच जगत् के बीजभूत उस कल्पवृक्ष अक्षयवट का स्वरूप को मैं जानता हूँ। और दूसर कोई नहीं सो सब आप लोगों से मैं निरूपण किया।

सूत उवाच। एवं प्रयाग तीर्थस्य माधवस्य वटस्यच॥ माहात्म्यं सकलं श्रुत्वा नत्वा ब्रह्म सुताः गताः॥

सूत जी बोले। इसी तरह प्रयाग तीर्थ का माधव जी का और अक्षयवट का माहात्म्य सुनकर ब्रह्मा के पुत्र लोग भगवान को नमस्कार करके चले गये।

तस्मादेवं विधो वृक्षो नास्ति ब्रह्माण्डगोलके। अतोर्चयंत्यमुं देवा मनुष्यानांतु का कथा॥

इससे इस तरह के वृक्ष ब्रह्माण्ड गोलोक में नहीं है। इस कारण इस वृक्ष को देवता लोग पूजन करते हैं। मनुष्यों को तो क्या कहना है।

तस्मान्मुनिवरा यूयमेनं पूजयताक्षयं। येन्येऽपि पूजयिष्यंनिप्राप्स्यंतेते मनोगतं॥

इस कारण हे मुनि लोग आप लोग भी इस अक्षयवट को पूजन करें। और भी जो कोई पूजन करेंगे सो भी मनोरथ को प्राप्त होंगे।

यात्रार्थ मागता ये वै नरानार्य्यो मलाशया॥ संपूज्य प्रार्थ यंत्येते लभंते फलमक्षयं॥

प्रयाग यात्रा में आये हुए मनुष्य वा स्त्री शुद्ध हृदय होकर जो अक्षयवट का पूजन करके अपना मनोरथ की प्रार्थना करते हैं सो अक्षय फल को प्राप्त होते हैं।

सृष्टिकर्त्ता यदा ब्रह्मा न लेभे सृष्टि साधनं॥
तदाक्षय्यवटं चैनं पूजयामास कामदं ॥
ततोक्षय्यां सृष्टि दृष्टिंलेभे ब्रह्मा द्विजोत्तमाः॥
सृष्टिं चकार सोक्षय्या मंडजादि चतुर्बिधां॥

सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा जब सृष्टि बनाने में अक्षम हुए तब इस अक्षयवट का पूजन करके सृष्टि करने की ज्ञान दृष्टि प्राप्त हुए। बाद हे मुनि लोग तव ब्रह्मा जरायज स्वेदज अंडज और उद्भिज यही चारों प्रकार के सृष्टि को किया।

ब्राह्मणा क्षत्रिया वैश्या शूद्रानार्य्यश्चसप्तमाः।
पूजनादस्यसंसिद्धिं योस्यंत्यत्र न संशयः॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वेश्य शूद्र वर्ण स्त्री आदि सब अक्षयवट के पूजन से सब सिद्धि को प्राप्त होते हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है।

पुत्र पौत्र प्रपौत्रैश्च कुल वृद्धिः प्रजायते॥
सौभाग्यं लभते नारी पूजनाज्जन्म जन्मनि॥

पुत्र पौत्र प्रापौत्र करके कुल की वृद्धि होती है। जो स्त्री इस अक्षयवट के पूजन करते हैं वे सभी लोग जन्म जन्म सौभाग्यवती होती हैं।

मृत वंध्या मुख्य वंध्या काकवंध्या चयोवला॥
कन्या वंध्याच सत्पुत्रं प्राप्नोत्यस्य प्रपूजनात्॥

मृत वत्सा स्त्री मुख वंध्या स्त्री काकवंध्या (याने) जिस स्त्री के एक लड़की या लड़का होके फिर सन्तान नहीं होते वह स्त्री कन्या वंध्या याने जिसकी कन्या कन्या होती है वह स्त्री वे स्त्री लोग जब अक्षयवट का पूजन करती हैं तब सत्-पुत्र लाभ होता है।

यान् यानभीप्स्यते कामान् स्तान् सर्वान् प्रददात्यसौ ॥ संतान वर्द्धनश्चापि सर्व संपत् करोपिच ॥

जो जो कामना अक्षयवट से प्रार्थना किया जाता है सो सब पूर्ण हो जाता है। सन्तान को बढ़ाने वाला और संपूर्ण संपदा को देने वाला भी है।

स शेतेवै पुमानाद्यः संहृत्य भुवन त्रायं ॥
पादांगुठं करे धृत्वा पक्षिन्नास्येत्र बालकः ॥
तत्स्वरूपं प्रवक्ष्यामि गुणत्रयमयं च तत् ॥
तंकल्पवृक्षमित्याहुरपरे वेदसंज्ञको ।
प्रणवं केचिदित्या हुर्माया वृक्ष मथा परे ॥
प्रधान पुरुषं केचित् केचित् संसृत कारणम् ॥

विश्वेश्वर स्त्रिशूलाग्रे काशी मारोप्य सत्वरम् ॥ तिष्ठति प्रलये यस्य मूले नृत्यन् प्रहर्षित: ॥ तस्मिन् काले वटं सर्वे प्रार्थयंतो ह्यक्षयम् ॥ पूजयंति नमस्यंति गृणांति च पुरः स्थिताः । वटस्य प्रणिपातेन सर्वं देव प्रियोभवेत् । वटस्यध्यान मात्रेण सर्वे ध्याता न संशयः ॥ गंगा यमुनयोर्मध्ये यावत्षट् कूल दर्शनम् । तावत्क्षेत्रं वटस्यास्ति तदक्षय मुदा हृतं ॥ एवं यःस्तौतितंभक्त्या नारी वा पुरुषोपिवा ॥ भुक्त्वेह विपुलान् भोगान्परत्र सुख मश्नुते ॥ आयुरारोग्य सौभाग्य संपत्संतति काम्यया । या नारीवट सावित्री व्रतमत्र करिष्यति ॥ गृहीत व्रत सिध्यर्थ मुद्यापन मथापिवा । यथा शक्ति यथा वित्तसा तत्फल मवाप्स्यति । एवं वोवट माहात्म्यं मयाप्रोक्तं मुनीश्वराः । रिणी-

सन कादिभ्यः प्रोक्तं सर्व फल प्रदं । अक्षय-वट माहात्म्यं वहु वर्ष शतैरपि । वक्तु कोवा समर्थोऽस्ति मयोक्तं कृपया गुरोः ॥

अर्थ—परब्रह्म परमात्मा आदि पुरुषः तीनों भुवन को अपने में एकत्र करके पांव के अँगूठे को मुख में चुषता हुआ बालक रूप से जिस वृक्ष में सोते हैं । उस अक्षयवट वृक्ष को कोई कल्प वृक्ष कहते हैं कोई वेद कहते हैं कोई साक्षात् ॐकार कहते हैं । कोई माया वृक्ष कहते हैं । कोई प्रधानपुरुष कहते हैं । साक्षात् विश्वनाथ जी प्रलय के समय त्रिशूल ग्र में काशीपुरी को स्थापन करके जिस अक्षयवट के मूल में अत्यन्त हर्ष हो कर नृत्य करते हैं । जिस वट को प्रणाम करने से सम्पूर्ण देवता प्रसन्न हो जाते हैं जिस वट के ध्यान करने से मानो सब देवताओं के ध्यान हो चुका । गंगा यमुना के बीच में जहाँ तक षट् कूल का याने गंगा जी के दो किनारा यमुना जी के दो किनारा और गंगा यमुना के संगम का दो किनारा दिखलाई पड़ता है तहाँ तक अक्षयवट के क्षेत्र का प्रमाण है सो अक्षय है

नमस्ते वृक्षराजाय ब्रह्म विष्णु शिवात्मने । सप्त पाताल संस्थाय विचित्र फल दायिते ॥ नमोभेषजरूपाय मायायाः पतये नमः॥ माघ वस्य जलक्रीडा लोल पल्लव कारिणे॥ प्रपंच वीजभूताय विचित्र फलदायच ॥ नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥

इस प्रकार जो पुरुष या स्त्री भक्ति युक्त होकर अक्षयवट का स्तुति करते हैं सो इस मृत्य लोक में सम्पूर्ण भोगों को भोग ,कर परलोक में भी संपूर्ण सुख को भोगते हैं। जो स्त्री आयुः आरोग्य सौभाग्य सम्पत्ति और सन्तान के कामना करके इस वट के समीप वट सावित्री व्रत करती है अथवा वट सावित्री व्रत का उद्यापन यथा शक्ति से करती हैं सो सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करती है इसी तरह अक्षयवट का माहात्म्य आप लोगों से मैंने कहा। जैसा कि सनकादिकों से विष्णु भगवान कहे थे।

मार्कण्डेयजी से राजा युधिष्ठिर पूँछते हैं कि महाराज कृपा कर अक्षयवट महात्म्य वर्णन करिये !

(मत्स्य पुराण के अक्षयवट माहात्म्य)

मार्कंडेयउवाच।

बटमूलं समासादय यस्तुप्राणान् परित्यजेत्।
सर्बान्लोकानतिक्रम्य शिवलोकंसगच्छति।।३॥

अर्थ—जो नर अक्षयवट मूल का भक्ति से पूजन कर गले से वृक्षा की शाखा लगा प्रेम से भेंट कर प्राण त्यागतेहैं वो सब लोकों को जीत कर शिव लोक को जाते हैं।

यदाते द्वादशादित्या स्तपंते रुद्र माश्रिता
निर्द्दहंति जगत्सर्बं बटमूलं न दह्यत।।४।

अर्थ—जबशिव के सहारे से बारहों सूर्य्य के प्रचंड तेज से सारा जगत दग्ध हो जाता तब केवल एक अक्षयवट वृक्ष नहीं दग्ध होता।

नोट—क्योंकि उसका किसी काल में लय नहीं होता और जो अक्षयवट के नीचे दान पुन्य अथवा निवास करते हैं उनका भी क्षय नहीं होता और सब तीर्थ कल्प के अन्त में नष्ट हो जाते हैं, परन्तु अक्षयबट नहीं नष्ट होता इस लिये मनुष्यों को इनका बिशेष करके दर्शन करना चाहिये क्योंकि। ऐसा अनादि तीर्थ दूसरा संसार भर में नहीं है।

नष्टं चंद्रार्के पबनं यदाचै कार्णबं जगत।
तदा स्वपिति तत्र श्रीबिष्णुर्बट पुटेसदा॥५॥

अर्थ—जब चन्द्र सूर्य्य और पवनादि नष्ट होकर प्रलय में सारा जगत जलामई हो जाता है तब उस समय श्रीविष्णु भगवान अक्षयवट वृक्ष के पत्र पर शयन करते हैं।

देव दानव गंधर्वा ऋषयः सिद्ध चारणाः।
सदा सेवंति तत्तीर्थं गंगा यमुन संगमे॥६॥

अर्थ—देवता दानव गन्धर्व ऋषि सिद्ध और चारण लोग गंगा यमुना संगम के निकट रह कर उस तीर्थ अर्थात् अक्षयबट का सदा सेवन करते हैं।

नोट—इसलिये कि हमें महाप्रलय के कष्टों से मृत्यु न हो।

तदा नश्यंति तत्सर्वं प्रयागो नैव नश्यति।
विष्णुःशेतेयतस्तस्य शाखायांबालरूपधृक्॥७॥

अर्थ—उस समय जब सारा संसार नाश हो जाता है तब भी प्रयाग का नाश नहीं होता क्योंकि अक्षयवट वृक्ष के शाखा पर विष्णु भगवान बाल रूप धर शयन करते हैं।

शेते यत्र पुटे देवो मया दृष्टो महद्भुतः।
एकी भूय समुद्रास्तु प्लावयंति भुवस्तलम्॥८॥

अर्थ—उस अक्षयवट वृक्ष के पत्ते पर शयन करते हुए विष्णु भगवान को देख कर उनकी बडी अद्भुत माया को देखा। एकसमय का हाल है कि मैं उनके महाप्रलय के कौतुक देखने के निमित्त नदी के तट पर बैठा था तो क्या देखा कि चारों ओर से पानि उमडा और एक समुद्र मारे संसार को जल से बोर दिया और मैं उसी अथाह जल में डूबने और उतरने लगा।

तत्र मज्जैस्तरंगैस्तु प्रोह्यमानं समंततः।
दृष्टूवाच तत् सुतं निकटे गतवानहम् ॥ ९ ॥

अर्थ—तब मैंने अपनी जान बचाने के लिये परमेश्वर का ध्यान किया तो यही अक्षयवट वृक्ष मुझे अथाह पानी में दिखाई दिया और जब उसकी डाली पकड के जान बचाने के निमित्त मैं उसके निकट पहुंचा तब क्या देखा कि एक पत्ता उसका दोने के समान बना हुआ है और उसमें एक बारह तेरह दिन का बालक अति सुन्दर अपने पैर का अंगूठा चूसता हुआ सोता है।

प्रष्टुं किंचिदुपाक्रांत समाश्वास्य भयार्दितः।
तावत्तस्य हिवालस्य श्वासेनैवो।दरंगतः ।।१०।।

अर्थ—फिर उस बालक को मुसकुराते देख कर ज्यों ही गोद उठाने को चला तो बालक रूप भगवान ने अपना स्वांस खींचा तो मैं मच्छड की भांति उनके पेट में घुस गया।

तत्र दृष्टवा जगत्सर्वं माश्वस्ताः सर्वंवत्पुनः।
अनेकचित्रं तत्रैव स्वाश्रमं प्राप्य तस्थि वान् ॥११॥

अर्थ—और वहां हम सारे ब्रह्माण्ड और नाना प्रकार के चित्र और अपनी कुटी यह सब पहिले सा रचा देखकर बहुत आश्चर्य माना।

पुनस्तस्यैव निःश्वास त्याजितः प्रलयार्णवे।
सं भ्रातोस्मि महा ग्राहैर्मकरैश्चतिमिंगिलैः।।१२।

अर्थ—जब स्वांस छोड़ती समय मैं नाक के बाहर निकल आया तब फिर उस बालक को पहिले की भाँति गोद उठा के प्यार करना चाहा तो वह बालकरूपी भगवान और अक्षयवट वृक्ष ये दोनों अंतर्ध्यान हो गये और मैं फिर पहिले सा प्रलय काल जल में गोता खाने लगा और घड़ियाल, मगर, मछलीयां मुझको कभी निगल जाते और कभी अपने मुखसे उगेल देते थे।

ग्रस्यमान इवत्रस्यत् कंपमानः पुनः पुनः।
एवंस्तु बहुशो राजन् दृष्टवान् दुर्लभं बटे।।१३।।

अर्थ—तब मैं फिर जलचरों से त्रासमान होकर थर २ कांपने लगा मार्कण्डेय ऋषि राजा युधिष्ठिर से कहते हैं कि हे राजन्! ये सब चरित्र अक्षयवट वृक्ष में देखा जो देखना दुर्लभ है।

महेश्वरो बटो भूत्वा तिष्ठते परमेश्वरः।
विष्णुर्माधव रूपेण प्रयागं परिरक्षति।।१४।।

अर्थ—अक्षयवट पर महादेव जी वास कर प्रयाग की रक्षा करते हैं और विष्णु भगवान माधवरूप धारण कर प्रयाग की रक्षा करते हैं इससे प्रयाग का नाश महाप्रलय में भी नहीं होता।

तितासितेयन्नयेन द्वयीव नद्यौतृतीयंतु स्वर-स्वतीव। बटो जटाजूट कलापएत्र प्रयागरूद्री जयतीह लोके ॥१५॥ सितासिते यत्र तरंग चामरे नद्योविभाते मुनि भानु कन्यके। नीला तपत्रां बट एव साक्षात् सतीर्थ राजो जयति प्रयाग: ॥१६॥ सकाम धर्मार्थ विशेष गुंफिता वेणी बसयं किलमोक्ष लक्षया। ततप्रांतभागो बट एव राजते गुंफतसमूहाभ्यनदद्बद्धचित्र: ॥१७॥

अर्थ—जिन रुद्र रूपी प्रयाग के गंगा, जमुना और सरस्वती यह तीनों नेत्र हैं और बट जो अक्षयवट है वही जटाजूट का समूह है ऐसे रुद्ररूपी प्रयाग को जय हो) गंगा और जमुना दोनों नदियों की लहर श्वेत और श्याम चमर है और बट जो अक्षयवट है वही नील रंग का राजा प्रयाग-राज का सिर छत्र है ऐसे तीर्थराज जो प्रयाग है उनकी जय हो। अर्थ, धर्म्म और काम यह तीनों चोटी है और मोक्ष उसका लक्ष है इन्हीं के निकट में अक्षयवट शोभा देते हैं, तुह समूह अपूर्व रूप से शब्द करते हैं।

भुक्त्वाच विपुलान् भोगान् तत्तीर्थं लभते पुन:अथ संध्यावटे रम्ये ब्रह्मचारी जितेन्द्रय:

।।१८।। उपासीतं शुचिः संध्यांब्रह्मलोक म- मुपात्। कोटि तीर्थं समासाद्य यस्तु प्राणा- परित्यजेत् ।।१९।। कोटि वर्ष सहस्राणि स्वर्ग लोके महीयते। ततः स्वर्गात् परिभ्रष्टोक्षीण कर्मा दिवश्च्युतः।।२०।।

अर्थ—यदि कोई ब्रह्मचारी दशों इन्द्रियों को जीत पवित्र हो संध्याकाल अक्षयवट मूल में जाकर भक्ति से संध्या करे तो वह सब पापों से मुक्ति पाकर ब्रह्मलोक में सुख से बास करे। और जो अक्षयवट के शाखा से गला लगा मनुष्यों की भाँति परस्पर भेंट कर प्राण त्यागते हैं वह कोटि तीर्थ का प्राप्त कर कोटि वर्ष लो सुरपुर में हर्ष से वास कर स्वर्ग के सुख भोग चुकने पर स्वर्ग त्याग कर फिर पृथवी का अति सुन्दर मणि मुक्तादिक करके युत महा धनवान राजा होते हैं।

इति श्री पद्मपुराणे सुतशौनकादि सम्बादे
मत्स्य पुराणे युधिष्ठिर मार्कण्डेय
सम्वादेअक्षयवट माहात्म्यं समाप्तम्

शुभं भूयात्

न लेने का सोच है न गिरने का ग़म
ये माल है चोखा कीमत में कम

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

प्रयाग अक्षयवट

महात्म्य ।

लेखक

प्रेमनाथ योगीश्वर

प्रकाशक

अनन्तनाथ योगीश्वर

कर्नैलगञ्ज, इलाहाबाद ।

[प्रकाशक के बिना आज्ञा कोई महाशय न छापें]

मूल्य दो पैसा] १९२४ [चतुर्थवार ८०००

अक्षयवट के सर्ब देवताओं के नाम

१ धर्मराज।
२ अन्नपूर्णा।
३ सङ्कटमोचन।
४ लक्ष्मी।
५ गणेश।
६ ढुंढराज बड़े गणेश।
७ बालमुकुन्द ब्रह्मचारी।
८ राजाप्रयागराज।
९ शूलटङ्केश्वर महादेव।
१० अक्षयवट।
११ महादेव जी।
१२ डंडपाणि।
१३ भैरोनाथ।
१४ ललिता जी।
१५ गङ्गाजी।
१६ नृसिंह भगवान।
१७ सरस्वती।
१८ दत्तात्रई।
१९ श्यामकार्तिक।
४० यमुनाजी।
२१ सूर्य्यनारायण।
२२ गुरुगोरक्षनाथ।
२३ जाम्वान।
२४ वेदव्यास जी।
२५ महावीर।
२६ पवन देवता।
२७ सत्य नारायण।
२८ मार्कण्डेयजी।
२९ पार्वती।
३० सिद्धनाथ।
३१ वेनीमाधो।
३२ कुबेरभण्डारी।
३३ अग्निदेवता।
३४ रामचन्द्र।
३५ दुर्वासा ऋषि।
३६ शेष भगवान्।
३७ इन्द्र राजा।
३८ यमराज।

॥ इति ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

प्रयाग महात्म्य।

युधिष्ठिर उवाच—

पृच्छामि त्वां महाप्राज्ञ ! नित्यं त्रैलोक्यदर्शिनम् ।
कथयत्वं समासेन येन मुच्येत किल्विषात् ॥ १ ॥

राजा युधिष्ठर जी मार्कण्डेयजी से बोले कि हे महाराज ! आप त्रिलोकी के देखने वाले हैं और सर्वज्ञ हैं आप मुझको सब पापों का नाश करने वाला कोई ऐसा उपाय संक्षेप से बताइये जिससे मेरा उद्धार हो । मार्कण्डेय उवाच—

शृणु राजन् महाबाहो सर्व पातक नाशनम् ।
प्रयाग गमनं श्रेष्ठं नराणां पुण्य कर्म्मणाम् ॥
ततः पुण्यतमं नास्ति त्रिषुलोकेषु सतज ! ।
प्रयागं सर्व्वं तीर्थेभ्यः प्रवदन्त्यधिकं द्विजाः ॥
श्रवणात् तस्य तीर्थस्य नाम सङ्कीर्त्तनादपि ।
मृत्तिकालेपनाद्वापि सर्व्व पापैः प्रमुच्यते ॥
तत्राभिषेकं यः कुर्य्यात् सङ्गमे संशतव्रतः ।
पुण्यं स महदाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः ॥

मार्कण्डेय जी बोले, कि हे राजा ! मैं तुम से सब पापों के नाश करने वाले उपाय को कहता हूं श्रवण करो—

धार्म्मिक जनों को प्रयाग जाना बहुत श्रेष्ठ है । हे भारत ! त्रिलोकी में प्रयाग जी से अधिक कोई तीर्थ पवित्र नहीं है यह तीर्थ अपने प्रभाव से सब तीर्थों से अधिक है । प्रयाग तीर्थ के नाम श्रवण करने से वा स्मरण करने से अथवा शरीर पर वहाँ की मृत्तिका लगाने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है और वहां गङ्गा यमुना के स्पर्श करने से पुरुष पापों से मुक्त

हो जाता है। जो अभिषेक करता है वह राजसूय अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य के फल को पाता है।

यु० उ०—भगवान्! केन विधिना गन्तव्यं धर्म्मनिश्चयैः।
प्रयागे योविधिः प्रोक्तस्तन्मे ब्रूहि महामुने ॥
मृतानां का गतिस्तत्र स्नातानां तत्र किम्फलम्।
ये वसन्ति प्रयागेतु ब्रूहि तेषां च किम्फलम् ॥

युधिष्ठर बोले—हे भगवान्! अब आप मुझ से कहिये कि प्रयाग की किस विधि से यात्रा करनी चाहिये, वहां मरने वालों की क्या गति, स्नान करने वालों को कौन फल और निवास (कल्पवास) करने वालों को क्या पुन्य मिलता है।

मा० उ०—कथयिष्यामितेवत्स! यच्छ्रेष्ठं तत्रयत्फलम्।
पुराहि सर्व्वं विप्राणां कथ्यमानां मयाश्रुतम् ॥ ४ ॥
प्रयागतीर्थयात्रार्थी यः प्रयाति नरः क्वचित्।
बलिवर्द समारूढ़ः श्रणु तस्यापि य.फलम् ॥५॥
नरके वसते घोरे गवां क्रोधाहि दारुणे।
सलिलं न च गृह्णन्ति पितरस्तस्यदहिनः ॥६॥

मार्कण्डेय जी बोले कि हे वत्स! वहां का जो श्रेष्ठ फल है उसे मैं वर्णन करता हूँ तुम ध्यान दे सुनो। जो प्रयाग तीर्थ की यात्रा करने वाला पुरुष प्रयाग जी में बैल की सवारी में जाता है वह घोर और दारुण नरक में जाता है उसके तर्पण किये हुए जल को भी पितर नहीं ग्रहण करते।

मा० उ०—ततो गच्छेत धर्म्मज्ञ! प्रयाग ऋषि सम्मतम्।
यत्र ब्रह्मादयो देवा दिशश्च सदिगीश्वरः ॥
लोकपालाश्च सिद्धाश्च निरताः पितरस्तथा।
सनत्कुमारप्रमुखा स्तथैव च महर्षयः ॥
तथा नागाः सुपर्णश्च सिद्धाश्च क्रतवस्तथा।
गन्धर्व्वाप्सरसश्चैव सरितः सागरास्तथा ॥

हरिश्च भगवानजिपप्रास्तो त भगावृतः ।
तत्र त्रीण्यग्निकुण्डानि तयोर्मध्ये तुजाह्नवी ॥

हे राजन्! प्रयाग जाने वाले को चाहिये कि वह प्रयाग तीर्थ की स्तुति करता हुआ प्रयागराज में जाय जहां कि ब्रह्मादिक देवता, ऋषि, सिद्ध, चारण, लोकपाल, साध्य, संज्ञक देवता, लोकों के पितर, सनत्कुमारादिक, परम ऋषि, अङ्गिरा आदि, ब्रह्म ऋषि, नाग, सुपर्ण, सिद्ध गन्धर्व अप्सरा, समुद्र नदी, पर्वत, विद्याधर और साक्षात् विष्णु भगवान् ब्रह्मा जी समेत स्थित हैं और जहां तीन अग्नि के कुण्ड हैं जिसके मध्य में जाह्नवी है।

मा० उ०—प्रयागात् समति क्रान्तासर्व्व तीर्थं पुरस्कृता ।
तपनस्य सुता तत्र त्रिषुलोकेषु विश्रुता ॥
प्रयाग जघनस्यान्तमुपस्थ मृषयो विदुः ।
प्रयागं स प्रतिष्ठानां कम्बलाश्वतरावुभौ ॥
तीर्थं भोगवती चैव वेदी प्रोक्ता प्रजापतेः !
तत्र वेदाश्च यज्ञाश्च मूर्त्तिमन्तो महामते ! ॥
प्रजापति मुपासन्ते ऋषयश्च महाव्रताः ।
यजन्ते ऋतु भर्द्देवास्तथा चक्रधराः सदा ॥

प्रयाग में ही सब तीर्थों से नमस्कृत सूर्य्य की पुत्री श्रीयमुना जी गङ्गा जी के संग में मिली हुई हैं। हे राजशार्दूल। प्रयागजी में कम्बल और श्वतर नाम दो तट हैं वहां भोगवती पुरी है और प्रजापति की वेदी रेखा है। हे युधिष्ठिर! वहां वेद और यज्ञ मूर्त्तिमान होकर ब्रह्मा जी की उपासना करते हैं। तपोधन ऋषि देवता चक्रधारी और राजा यहां सब यज्ञों करके प्रयाग की उपासना करते हैं।

मा० उ०—षष्टिर्धन्वि सहस्राणि यत्ता रक्षन्ति जाह्नवीम् ।
यमुनां रक्षति सदा सविता सप्त वाहनः ॥१५॥

प्रयागन्तु विशेषेण स्वयं रक्षति वासवः ।
मण्डलं रक्षति हरि सर्व्वैः दैवैश्च सम्मितम् ॥१६॥
न्यग्रोधं रक्षते नित्यं शूलपाणिर्महेश्वरः ।
स्थानं रक्षन्तिवैदेवाः सर्व पाप हरं शुभम् ॥१७॥

श्री गंगा जी की रक्षा साठ हजार धनुष करते हैं, यमुना जी की रक्षा सूर्य्य करतेहैं, प्रयाग की रक्षा इन्द्र करते हैं, प्रयाग जी के मण्डल की रक्षा देवताओं समेत विष्णु भगवान् करते हैं, प्रयाग के अक्षयवट की रक्षा तो शिवजी करते हैं, और देवतालोग सब पापों के हरने वाले स्थान की रक्षा करते हैं। मैं तुमसे वर्णन करता हूं श्रवण करो। बीस कोस में प्रयाग के मंडल का विस्तार है वहाँ पाप कर्मों के निवारण होने से उसकी रक्षा के निमित्त उत्तर की ओर प्रतिष्ठान तीर्थ में ब्रह्मा जी, वेनीमाधव रूप से विष्णुभगवान् और शिवजी अक्षयवट रूप हो प्रयाग में स्थित हो रहे हैं। इन सब के सिवाय देवता, गन्धर्व सिद्ध और परमऋषि यह सब पाप कर्म को दूर करके उस प्रयाग जी के मंडल की रक्षा करते हैं जहाँ पर मनुष्य अपने सब पापों को त्याग कर कभी नर्क को नहीं देखता।

मा० उ०—आप्रागप्रतिष्ठानात्पुराप्रासुकेह्रदात् ।
कम्बलश्वतरौ नागौ नागश्च वहुमूलकः ।
एतत्प्रजापतेः क्षेत्र त्रिषुलोकेषु विश्रुतम् ॥
तत्रस्नात्वादिवंयान्ति ये मृतास्ते पुनर्भवाः ।
ततो ब्रह्मादयोदेवा रक्षां कुर्वन्तिसङ्गताः ॥
दश तीर्थ सहस्राणि षष्टिकोट्यस्तथा परः ।
तेषां सान्निध्यम त्रैव ततस्तुकुरुनन्दन ! ॥
अन्ये च वहवस्तीर्थाः सर्व पाप हराः शुभाः ।
नशक्याकथितुं राजन् वहुवर्ष शतैरपि ।
संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि प्रयागस्यतु कीर्तनम् ॥

प्रयाग प्रतिष्ठान से लेकर वाशुकी हद तक जो कम्बल, अश्वतर और वहुमूलक नाम जो नाग स्थान है यह सब मिला कर त्रिलोकी में प्रसिद्ध प्रजापति क्षेत्र कहाते हैं वहां स्नान करने से स्वर्ग मिलता है, मरण होने से पुनर्जन्म नहीं होता और वहाँ वास करने वालों की रक्षा ब्रह्मादिक देवता करते हैं। इस प्राग तीर्थ के समीप साठ करोड़ दश हज़ार तीर्थ वास करते हैं अतिरिक्त इसके हे राजन्! अन्य वहुत से यहाँ शुभ तीर्थ पापों के हरने वाले हैं उनको मैं सैकड़ों वर्ष में भी वर्णन नहीं कर सकता इस हेतु संक्षेप पूर्व्वक प्रयागजो महात्म्य को कहते हैं श्रवण करो।

मा० उ०—कम्बलाश्वतरौनागै वियूलेयमुनातटे।
तत्रस्नात्वा च पीत्वा च सर्व पापैः प्रमुच्यते॥
तत्र ग त्वा च सस्थान महादेवस्य धीमतः।
नरस्तारयते सर्वान् दश पूर्वान दशापरान्॥
कृत्वाभिषेकन्तुनरः सोऽश्वमेध फलं लभेत्।
स्वर्गलोक मवाप्नोति यावदा भूत संप्लवम्॥

कम्बल, अश्वतर और नागवाले जो यमुना के उत्तर तट हैं वहां स्नान कर जल पान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है और जहां महादेव जी स्थिति वहां जाकर मनुष्य यह पहली पीढ़ी के दश पुरुषों को और पिछली पीढ़ी के भी दश पुरुषों को पार उतार देता है। वहां अभिषेक करने वाला मनुष्य अश्वमेघ यज्ञ के फल को पाता है और प्रलयकाल तक स्वर्ग में वास करता है!

मा० उ०—पूर्व पर्श्वेत गङ्गाया स्त्रिपुलोकेषु भारत।
कूपश्चैवतु सामुद्रं प्रतिष्ठानश्च विश्रुतम्॥
ब्रह्मचारी जित क्रोधस्त्रिरात्रं यदि तिष्टति।
सर्व पाप विशुद्धात्मा सोऽश्वमेधफलं लभेत्॥

उत्तरेण न तेजातान् भागीरथ्यास्तु पूर्वतः ।
हंस प्रपतनं नाम तीर्थं त्रैलोक्य विश्रुतम् ॥
अश्वमेध फलं तस्मिन् स्नान मात्रेण भारत !
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावत् स्वर्गे महीयते ॥

हे भारत ! गङ्गा जी के पूर्व भाग में एक समुद्रकूप त्रिलोकी में विख्यात है वहां ब्रह्मचर्य में स्थित, क्रोध से रहित जो तीन रात्रि वास करता है वह सब पापों से छूट कर अश्वमेध यज्ञ के फल को पाता है। गङ्गा जी के पूर्व की ओर उत्तर के स्थान में जो हंसप्रतन नामक तीर्थ त्रिलोकी में प्रसिद्ध है, हे भारत ! वहाँ स्नान मात्र के ही करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। और जब तक सूर्य और चन्द्रमा रहते हैं तब तक स्वर्ग में वास करता है।

मा० उ०—उर्वशी रमणे पुण्ये विपुले हंस पुण्डुरे ।
परित्यजति यः प्राणान् शृणु तस्यापि यत् फलम् ॥
षष्टिवर्ष सहस्राणि षष्टि वर्ष शतानि च ।
सेव्यते पितृभिः सार्द्धं स्वर्गलोके नराधिप ॥

पवित्र उर्वशी रमण तीर्थ, विपुल तीर्थ पर और हंसतीर्थ पर जो प्राणों को त्यागता है वह पुरुष साठ हज़ार साठ सौ वर्ष तक स्वर्ग में वास कर पितरों के साथ आनन्द करता है।

मा० उ०—मानसं नाम तत्तीर्थं गङ्गाया उत्तरे तटे ।
त्रिरात्रोपोषितो भूत्वा सर्व कामानवाप्नुयात् ॥
गो भूहिरण्य दानेन यत् फलं प्राप्नुयान्नरः ।
सतत् फलमवाप्नोति तत्तीर्थंस्मरते पुनः ॥
यमुने चोत्तर कूले प्रयागस्यतु दक्षिणे ।
ऋणप्रमोचनं नाम तत्तीर्थं परमं स्मृतम् ॥
एकरात्रोषितः स्नातश्चाऋणैः सर्वैः प्रमुच्यते ।
स्वर्गलोकमवाप्नोति अनृणश्च सदा भवेत् ॥

गङ्गा जी के उत्तर तट पर मानस नाम उत्तम तीर्थ है वहाँ तीन रात्रि उपवास करके मनुष्य सब पापों से छूट जाता है और सब मनोकामना भी सिद्ध हो जाती है। जो पुण्य कि गौ, भूमि और सुवर्ण दान से होता है वही पुण्य इस तीर्थ के स्मरण मात्र से होता है। यमुना के उत्तर तट पर प्रयाग जी से दक्षिण की ओर ऋणमोचन नामक परम उत्तम तीर्थ है वहाँ एक रात्रि के वास करने और स्नान करने से सब पापों से छूट कर स्वर्ग लोक में प्राप्त होता है और कभी ऋणी नहीं होता।

मा० उ०—सोम तीर्थं महापुण्यं महापातक नाशनम्।
स्नान मात्रेण राजेन्द्र! पुरुषास्तारयेच्छतम्।
तस्मात् सर्वं प्रयत्नेन तत्रस्नानं समाचरेत्॥
कालिन्द्री उत्तरे कूले जाह्नव्यां पश्चिमे तटे।
स्थापितं शिवलिङ्ग च भरद्वाजेश्वरं शिवः॥
महर्षिभिर्भरद्वाजोहविर्द्धाने चरन् पुरा।
भरद्वाजेश्वरश्चैव ब्रह्मवर्चः प्रवर्द्धकः॥

हे राजेन्द्र! एक महा पवित्र सब पापों के हरने वाला सोमतीर्थ है वहाँ स्नान मात्र ही के करने से मनुष्य सैकड़ों पुरुषों का उद्धार कर देता है इस निमित्त वहाँ सब यत्नों से करना चाहिये। यमुना जी के उत्तर कोण और गङ्गा जी के पश्चिम तट पर भरद्वाज मुनि का स्थापित किया भरद्वाजेश्वर नामक शिवलिङ्ग है और वहाँ महा ऋषियों से युक्त भरद्वाज जी सदा हवन और ध्यान में लगे रहते थे इनकी पूजा और दर्शन करने से ब्रह्मतेज की प्राप्ति होती है।

मा० उ०—शृणु राजन! महा गुह्यं सर्वं पाप प्रणाशनम्।
मास मेकन्तुयः स्नायात् प्रयागेनियतेन्द्रियः॥
षष्टि तीर्थं सहस्राणि षष्टि कोट्यस्तथापगाः।
माघमासे गमिष्यन्ति गङ्गा यमुना सङ्गमम्॥

गवांशतसहस्रस्य सम्यक् दत्तस्य यत् फलम् ।
प्रयागे माघ मासेतुत्र्यहस्नातस्यतत् फलम् ॥

हे राजन्! अब सब पापों के नाशक महागुह्य महात्म्य को सूनो कि जो जितेन्द्रिय पुरुष एक महीने तक प्रयाग जी पर स्नान करता है वह सब पापों से छूट कर परम पद को पाता है क्योंकि माघ के महीने में गङ्गा यमुना के सङ्गम में साठ हजार तीर्थ और साठ करोड़ नदी प्राप्त हो जाती हैं और जो पुण्य एक लक्ष गोदान करने में होता है वही पुण्य माघ मास में प्रयाग जी के तीन दिन केवल गङ्गा स्नान में प्राप्त होता है ।

मा० उ० – गङ्गायां भास्कर क्षेत्रे माता पितोगुरौ मृते ।
आधाने सोमपाने च वपनं सप्तसु स्मृतम् ।८॥
केशानां यावती संख्या छिन्नदां जाह्नवी जले ।
तावद्वर्ष सहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ।।९॥
गङ्गायां भास्कर क्षेत्रे मुण्डनं यो न कारयेत् ।
स कोटिकुल संयुक्त आकल्पंरौरवे वसेत् ॥१०।

गङ्गा जी पर, भास्कर क्षेत्र में, माता-पिता और गुरु के मरने पर मनुष्य जिस भाँति केश मुड़ाते हैं और जो आनन्द गर्भाधान और सोमपान में होता है वही फल प्रयाग में भी सिर मुड़ाने का है क्योंकि जितने मुड़ाने वाले के सिर में बाल होते हैं उतने ही वर्ष तक वह स्वर्ग-लोक में वास करता है। जो नर गङ्गा जी पर और भास्कर क्षेत्र में मुण्डन नहीं कराता वह अपने कोटिकुल के सहित रौरव नर्क में आकल्प तक वास करता है ।

सम्पूर्ण ।

आख्याहि मे यथा तथ्यं यथैषा तिष्ठिति श्रुतिः।
केनवा कारणे नैव तिष्ठन्ते लोकसत्तमाः॥ २९॥

युधिष्ठिर बोले हे मुने! जिस कारण से यह प्रसिद्ध है कि प्रयाग में ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्थित रहते हैं उस कारण को मेरे अर्थ यथार्थ रीति से वर्णन करो।

प्रयागे निवसन्ते ते ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः।
कारणं तत्प्रवक्ष्यामि शृणु तत्व युधिष्ठिर॥ ३०॥
पञ्च योजनविस्तीर्णं प्रयागम्यतु मण्डलम्।
तिष्ठन्ति रक्षणायात्र पाप कर्म निवारणात्॥ ३१॥
उत्तरेण प्रतिष्ठानाच्छन्नना ब्रह्म तिष्ठिति।
वेणी माधवरूपीतु भगवांस्तत्र तिष्ठति॥ ३२॥
महेश्वरो वटो भूत्वा तिष्ठते परमेश्वराः।
ततो देवाः स गन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः॥ ३३।
रक्षन्ति मण्डल नित्यं पाप कर्म निवारणात्।
यस्मिन्जुहन्स्वकं पाप नर कश्च न पश्यति॥ ३४॥

मार्कण्डेय जी कहते हैं कि हे युधिष्ठिर! प्रयाग में जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश क्यों रहते हैं उसका कारण मैं तुम से वर्णन करता हूँ श्रवण करो। बीस कोस में प्रयाग के मंडल का विस्तार है। वहाँ पाप कर्मों के निवारण होने से उसकी रक्षा के निमित्त उत्तर की ओर प्रतिष्ठान तीर्थ में ब्रह्मा जी, वेणी माधव रूप से विष्णु भगवान् और शिव जी अक्षयवट रूप हो प्रयाग में स्थित हो रहे हैं। इन सब के सिवाय देवता, गन्धर्व, सिद्ध और परम ऋषि यह सब पाप कर्म को दूर करके उस प्रयाग जी के मंडल की रक्षा करते हैं जहाँ पर मनुष्य अपने सब पापों को त्याग कभी नर्क को नहीं देखता।

योनरस्तत्र गत्वा वै प्रयागे स्नानमाचरेत्।
धनिनो दीर्घजीवी च जायते! नात्र संशयः॥ ३८॥

यत्र वटस्याक्षयस्य दर्शनं कुरुते नरः।
तेन दर्शन मात्रेण ब्रह्महत्या विनश्यति ॥३९॥
आदि वटः समाख्यातः कल्पान्तेऽपि च दृश्यते।
शेते विष्णुर्यस्य पत्रे अतोऽयमव्ययः स्मृतः ॥४०॥
तत्रपूजां प्रकुर्वन्ति मानवा विष्णु वल्लभाः।
सूत्रेणाऽऽच्छादितं कृत्वा पूजां चैव तु कारयेत् ॥४१॥

जो मनुष्य प्रयाग में जाकर स्नान करता है वह धनी और बहुत काल तक जीने वाला निस्सन्देह हो जाता है। परन्तु जहाँ पर अक्षयवट वृक्ष है उस अक्षयवट वृक्ष का मनुष्य दर्शन करें तो उसके दर्शन ही मात्र से ब्रह्महत्या नाश हो जाती है। वह अक्षयवट वृक्ष प्रसिद्ध है। कल्प के अन्त (महा प्रलय) में भी दिखाई पड़ता है। जिसके पत्ते में विष्णु जी सोते हैं। इसी से यह अक्षयवट कहाता है। विष्णु जी के भक्त (प्यारे) मनुष्य वहाँ पर उस वृक्ष की पूजा करते हैं। सूत से आच्छादित (लपेट) कर उस वृक्ष का मनुष्य पूजन करावे।

कल्पवृक्षं ततो गत्वा कृत्वा तंत्रिः प्रदक्षिणम्।
पूजयेत्परया भक्त्या मंत्रेणानेन तंवटम् ॥३१॥

प्रथम अक्षयवट के समीप जा तीन प्रदक्षिणा करके इस मंत्र से परम भक्ति पूर्वक तिसका पूजन कर।

मा० ३०—मंत्र—ॐ नमोऽव्यक्त रूपाय महाप्रलय कारिणे।
महेन्द्र सोपविष्टाय न्यग्रोधाय नमऽस्तुते ॥३२॥
अमरस्त्वं सदा कल्पे हरश्चाऽऽयतनं वट।
न्यग्रोध हरमे पापं कल्पवृक्ष नमोऽस्तुते ॥३३॥
नमस्ते कल्पवृक्षाय चिन्तितान्न प्रदाय च।
विश्वम्भराय देवाय नमस्ते विश्वमूर्त्तये ॥३५॥
नमोऽक्षयवटायैव अक्षय स्वर्गदायिने।
चित्रादिनाम क्षयाय सर्व पाप क्षयाय च ॥

हे अक्षयवट तुम को नमस्कार है क्योंकि तुम अक्षय स्वर्ग के देने वाले और पितरों के सर्व पाप का क्षय करने वाले हो। औं व्यक-रूप आपको नमस्कार है। महाप्रलय वासी और महेन्द्र के ऊपर स्थित होने वाले आपको नमस्कार है। महाकल्प में आप अमर रहते हैं, वटरूपी कल्पवृक्ष मेरे पापों को हरो आपको नमस्कार है। हमारे मनोरथों को पूर्ण करने वाले कल्पवृक्ष आपको नमस्कार है। संसार का पालन करने वाले संसार के रूप को धारण करने वाले अनेक गुण युक्त तुमको नमस्कार है।

स्था० उ० —भक्त्या प्रदक्षिणं कृत्वा नत्वा कल्पवटं नरः।
सहसा मुच्यते पापाज्जीर्णत्वच इवोरगः ॥३५॥
श्राद्धं वटतले कुर्य्याद्ब्राह्मणानां च भोजनम्।
एकस्मिन्भोजिते विप्रे कोटिर्भवति भोजिताः॥
योगीनश्च सदा श्राद्धे भोजनीया विपश्चिता।
योगधाराहि पितरस्तस्मात् योगी च पूजयेत्॥
ब्राह्मणानां सहस्त्रेभ्यो योगीत्व प्राशनो यदि।
यजमानश्च भोक्तश्च नौरिवाम्भसि तारयेत्॥
कदानः सनत्वग्रः कस्यचिद्धिविता सुनः।
यो योगि भुक्त लेषाच्चो भुवि पिंड प्रदास्यति॥

इस प्रकार भक्ति से अक्षयवट को प्रदक्षिणा और नमस्कार करके मनुष्य एक बारगी सब पापों से छूट जाता है जैसे कुचली से सर्प। अक्षयवट के नीचे श्राद्ध कर ब्राह्मणों को भोजन करावे क्योंकि यहाँ एक ब्राह्मण के भोजन कराने से कोटि ब्राह्मणों के भोजन कराने का फल मिलता है। जो पितृ-लोग योगाधार होकर मृत्यु को प्राप्त हुए हैं इसलिये विद्वान् मनुष्य को चाहिये कि श्राद्ध में सदा पहिले योगियों को भोजन कराना और पूजना चाहिये। क्योंकि हजार ब्राह्मणों के समेत

यदि योगी पहिले भोजन करता है तो यजमान और खानेवाला दोनों उसी तरह श्राद्ध के द्वारा संसार से पार हो जाते हैं।

छायां तस्य समाक्रम्य कल्पवृक्षस्य भोद्विजाः।
ब्रह्महत्यां नरो जह्यात्पापेष्वन्येषु का कथा ॥३६॥
राजसूयाश्वमेधाभ्यां फलं प्राप्नोति चाधिकम्।
तथा स्ववंश मुद्धृत्य विष्णु लोकं सगच्छति ॥३७॥

हे द्विजो! तिस कल्पवृक्ष की छाया में बैठ के मनुष्य ब्राह्मणों को और योगियों को दान करता है वह राजसूय और अश्वमेध यज्ञों के फल को पाता है और और कुल का उद्धार कर विष्णुलोक को जाता है।

पितृणां वल्लभं तद्वत पुण्यश्च विमलेश्वरम्।
पितृ तीर्थं प्रयागन्तु सर्वकाम फलप्रदम् ॥११॥
वटेश्वरस्तु भगवान् माधवेन समन्वितः।
योग निद्राशयः तद्वत् सदा वसति केशवः ॥१२॥

पितरों का प्यारा विमल पुण्यों का देने वाला पितरों क तीर्थ प्रयाग सब काम और सब फलों का देनेवाला है। हे राजन् सुनो—वटेश्वर भगवान् माधव से युक्त हैं। क्योंकि जब ईश्वर योगनिद्रा को लेते हैं तब केशवजी अक्षयवट में ही निवास करते हैं।

तत्रते द्वादशादित्यास्तपन्ति रुद्र संश्रिताः।
निर्दहन्ति जगत्सर्वं वट मूलं न दह्यते ॥४८॥
नष्ट चन्द्रार्क भुवनं यदाचै कार्णवं जगत्।
स्थीयते तत्र वै विष्णुर्यजमानः पुनः पुनः ॥४९॥
देव दानव गन्धर्वा ऋषयः सिद्ध चारणः।
सदा सेवन्ति तत्तीर्थं गङ्गा यमुन सङ्गमम् ॥५०॥

जब शिवजी के आश्रय होकर बारह सूर्य्य अपने तेज से सब जगत को भस्म करते हैं तब वे अक्षयवट की जड़को

नहीं भस्म कर सकते। क्योंकि जब प्रलय में सूर्य्य और चन्द्र-मादि भी नष्ट हो जाते हैं तब अक्षयवट के समीप बारम्बार उस वृक्ष का पूजा करते हुए विष्णु भगवान् वहाँ स्थित रहते हैं। हे राजेन्द्र! इसीलिये उस गङ्गा और यमुना के मध्यवर्ती तीर्थ (अक्षयवट) को देवता, दानव, सिद्ध, ऋषि, गन्धर्व और चारण आदि सब सदैव सेवन किया करते हैं।

तदा नश्यति तत्सर्वं प्रयागो नैव नश्यति।
वटो यस्त तस्यैव शाखायां वाल रूप। ७॥

उस समय जब सारा संसार नाश हो जाता है तब भी प्रयाग का नाश नहीं होता क्योंकि अक्षयवट के शाखा पर विष्णु भगवान् बालरूप धर शयन करते हैं।

वटमूलं समाश्रित्य यस्तु प्राणान् विमुञ्चति।
सर्व लोकान तिक्रम्य रुद्रलोकं स गच्छति। ४७॥
प्रयागे वट शाखायां देह त्याग करोतियः।
स्वयं देह विनाशस्य काले प्राप्ते महामतिः॥४४॥
उत्तमान् प्राप्नुयाल्लोकान्नात्मघाती भवेत् कचित्।
एतेषामधि कारस्तु सर्व्वेषां सर्व्व जन्तुषु॥४५॥
नराणामथ नाराणां सर्व्व सर्व्वेषु सर्व्वदा।
अशौचं स्यात्त्र्यहं तेषां वज्रानल हतेषु च॥४६॥

जो पुरुष प्रयाग जी में अक्षयवट के समीप जा विधि से पूजा और अङ्कमाल कर प्राण को त्यागता है वह सब लोकों को उलङ्घन कर सीधा शिवलोक को जाता है। और जो इस प्रयाग अक्षयवट के शाखा के संनिकट में देह को त्यागता है या स्वयं काल के आने पर प्राणों को छोड़ता है, वह चाहे आत्मघाती क्यों न हो तो भी उत्तम लोकों को प्राप्त करता है। स्मरण क्रिया के विषय में सब प्राणियों का अधिकार है, चाहे नर हो या नारी हो, वर्णों में चाहे कोई भी वर्ण हो,

अशोच हो या वज्र से मरा हो या अग्नि से जला हो वह भी यहां उत्तम गति को पाता है।

सकाम धर्मार्थ त्रिशेष गुंफिता वेणी वसेयं किल मोक्ष लक्ष्या।
तत् प्रांत भागे वट एव राजते सुगुफत्रद्भ्यनद्त वद्धचित्र।।७।

गङ्गा श्वेत और यमुना श्याम रूपी अपने २ जल तरंगों से जिनका चमर करती हैं और वटअर्थात् अक्षयवट का नीला पत्ता जिनके सिर पर नीला छत्र सम शोभा देता है ऐसे तीर्थ राज प्रयाग को जय बोलो। अर्थ धर्म्म और काम तीनों चोटी हैं और मोक्ष उसका वृक्ष है उन्हीं के निकट में अक्षयवट शोभा देते हैं, यह समूह अपूर्व रूप से शब्द करते हैं।

सितासिते यत्र यतद्वयांव नद्यौ तृतीयन्तु सरस्वमीय।
वटो जटाजूट कलावएव प्रयाग रुद्रो जयतीहलोके ।।५८।।

जिस सदाशिव रूपी प्रयाग के गङ्गा, यमुना, और सरस्वती आदि यही तीनों नदियां तीनों नेत्र और वटवृक्ष अर्थात् अक्षयवट जिनका जटा जूट है ऐसे साक्षात् सदाशिव रूपी प्रयाग की जय बोलो।

स्त्रियों के हित की बात

कई वर्षों से हमने स्त्रियों ही के लिए नवजीवन औषधालय खोल रक्खा है जिसमें दूर दूर की रोगी स्त्रियाँ आकर अपना इलाज कराती हैं और निरोग होकर जाती हैं। यदि आप हर तरह के इलाज करके थक गयी हों और निराश हो गयी हो तो एक बार हमारे नवजीवन औषधालय में आइये और अपने रोग की परीक्षा कराकर हमारी चिकित्सा और औषधियों का चमत्कार देखिये, आपका रोग चाहे कितना ही पुराना क्यों न हो यदि वह असाध्य नहीं हुआ है तो हमारी औषधियों से आपको शर्तिया फायदा होगा।

यदि आप के सन्तान न होती हो या होकर मर जाती हो या गर्भ पात हो जाता हो अथवा मासिक-धर्म सम्बन्धी किसी प्रकार की गड़बड़ी हो जैसे घट बढ़कर मासिक-धर्म का होना, या बहुत कम अथवा बहुत ज्यादा होना, या मासिक धर्म के समय दर्द होना, या जवानी में ही मासिक का बन्द हो जाना इत्यादि तो आप हम से दवा दवा कराइये आप को जरूर फायदा होगा। यदि आपको रक्त तथा श्वेत प्रदर, सोम रोग, रक्त

गुल्म इत्यादि कोई भी रोग हो तो एक बार अ
आप अवश्य अपने रोग की परीक्षा कराइये
और यदि हमारे यहाँ आने की भी फुरसत न हो
तो हमारे पास पत्र द्वारा आप अपना हाल लिख
भेजें परन्तु पत्र में पूरा पूरा और ठीक ठीक हाल
लिखें किसी बात का सङ्कोच न करें क्योंकि
रोगी स्त्रियों का पत्र सिवा मेरे और कोई नहीं
खोलेगा और न पढ़ेगा। ऐसे पत्र पूर्ण रूप से
गुप्त रक्खे जाते हैं और लिखने वाली स्त्री के लिये
औषध की उचित व्यवस्था कर दी जाती है।

हमारे यहाँ रोगियों के देखने की कोई फीस नहीं ली जाती है सिर्फ औषधियों के उचित दाम लिये जाते हैं। उसमें भी गरीब तथा अनाथ बहिनों के साथ बहुत रियायत की जाती है।

हमारा नाम और पता न भूलिये—

श्रीमती गोपालदेवी,
सम्पादिका—'गृहलक्ष्मी'
नवजीवन औषधालय,
कर्नैलगंज--प्रयाग।

पं० सुदर्शनाचार्य के प्रबन्ध से सुदर्शन प्रेस, प्रयाग में मुद्रित और प्रकाशित